इग्नू
जन–जन की
विश्वविद्यालय

BPSC-101

राजनीतिक सिद्धांत की समझ

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिती

प्रो.दरवेश गोपाल (अध्यक्ष)
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधीराष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो.गुरप्रीत महाजन
नीति अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. कृष्णा मेनन, जेंडर
अध्ययन केन्द्र, अम्बेडकर
विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो.अनुराग जोशी
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो.जगपाल सिंह
राजनीति विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

प्रो. (अ.प्रा.) वैलेरियन रौड्रिग्ज
अर्न्तराष्ट्रीय अध्ययन विद्यापीठ
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो.मीना देशपांडे
राजनीति विज्ञान संकाय
बंगलौर विश्वविद्यालय, बैंगालुरू

प्रो. शेफाली झा
नीति अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. विजयशेखर रेड्डी
राजनीति विज्ञान संकाय, सामाजिक
विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त
विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल

खण्ड और इकाई	इकाई लेखक	से अनुकूलित
खण्ड 1 राजनीतिक सिंद्धात का परिचय		
इकाई 1 राजनीतिक सिंद्धात क्या है– दो दृष्टिकोण : मानक और अनुभवजन्य	डॉ. राजेन्द्र दयाल और डॉ. सतीश कुमार झा, दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 3 एवंम् 4, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 2 राजनीति क्या है–राज्य और शक्ति का अध्ययन	डॉ. मनोज सिन्हा दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 1, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
खण्ड 2 राजनीतिक सिंद्धात के दृष्टिकोण		
इकाई 3 उदारवादी	डॉ. दिव्या रानी	इकाई 26, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 4 मार्क्सवादी	डॉ. तेजप्रताप सिंह, गोरखपुर विश्वविद्यालय	इकाई 21, एमपीएस– 001 से अनुकूलित
इकाई 5 रूढ़िवादी	डॉ. एन. डी. अरोरा, दिल्ली विश्वविद्यालय	इकाई 22, ईपीएस– 11 से अनुकूलित
इकाई 6 नारीवादी	सुश्री. गीतांजली अत्री जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय	
इकाई 7 उत्तर–आधुनिक	श्री शैलेन्द कुमार पाठक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
खण्ड 3 लोकतंत्र का व्याकरण		
इकाई 8 लोकतंत्र का व्याकरण	डॉ. राज कुमार शर्मा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
इकाई 9 लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तदायित्व	डॉ. रचना सुचिन्मयी, मगध विश्वविद्यालय	
इकाई 10 प्रतिनिधि लोकतंत्र और इसकी सीमाऍं	डॉ. सुरिन्दर कौर शुक्ला पंजाब विश्वविद्यालय	
इकाई 11 भागीदारी और मतभेद	डॉ. राजकुमार शर्मा इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	
इकाई 12 लोकतंत्र और नागरिकता	डॉ. राजकुमार शर्मा और दिव्या तिवारी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	

पाठ्यक्रम संयोजक और संपादक :प्रो. अनुराग जोशी

इकाईस्वरूपण, पुनरीक्षण और सामाग्री अद्यतन : डॉ. राज कुमार शर्मा, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

सामग्री निर्माण दल

श्री राजीव गिरधर असिस्टेंट रजिस्ट्रार (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	श्री हेमन्त परीदा अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन) एम.पी.डी.डी., इग्नू, नई दिल्ली	**कार्यालय सहायक** श्री राकेश चन्द्र जोशी इग्नू, नई दिल्ली

नवम्बर, 2019

© इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN:

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा,

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली–110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से निदेशक सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाषित।

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कम्प्यूटर्स, सी–206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रित :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

		पृष्ठ सं.
खंड 1	**राजनीतिक सिद्धांत का परिचय**	**9**
इकाई 1	राजनीतिक सिद्धांत क्या है –दो दृष्टिकोण : मानक और अनुभवजन्य	11
इकाई 2	राजनीति क्या है–राज्य और शक्ति का अध्ययन	25
खंड 2	**राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण**	**39**
इकाई 3	उदारवादी	41
इकाई 4	मार्क्सवादी	53
इकाई 5	रूढ़िवादी	69
इकाई 6	नारीवादी	81
इकाई 7	उत्तर-आधुनिकवादी	93
खंड 3	**लोकतंत्र का व्याकरण**	**109**
इकाई 8	लोकतंत्र का व्याकरण	111
इकाई 9	लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तदायित्व	123
इकाई 10	प्रतिनिधि लोकतंत्र और इसकी सीमाएँ	136
इकाई 11	भागीदारी और मतभेद	152
इकाई 12	लोकतंत्र और नागरिकता	163
अन्य अध्ययन सामग्री		**177**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम का परिचयः राजनीतिक सिद्धांत की समझ

अगस्त कोम्टे ने कहा था कि सिद्धांत वे वैचारिक लेंस हैं, जिनके माध्यम से हम बहुत से तथ्यों को सुलझा सकते हैं, जिनका हम प्रतिदिन सामना करते हैं। वस्तुतः, सिद्धांतों के बिना हम किसी वस्तुस्थिति की पहचान, तथ्य के रूप में करने में बिल्कुल सक्षम नही हो सकते हैं। एक अच्छे सिद्धांत की कुछ विशेषताएं होती हैं। जिसका पहला गुण किफायती होना अर्थात संक्षिप्ता। एक सिद्धांत को अनावश्यक कल्पनाशीलता व भ्रमित करने वाले विवरणों से बचना चाहिए। एक सार्थक सिद्धांत का दूसरा लक्षण विशुद्ध रूप से सटीक होना है। दुनिया के बारे में सटीक आकलन और स्पष्टीकरण के लिए, सिद्धांतों को पर्याप्त रूप से विस्तृत होना चाहिए। एक सहज सिद्धांत सामान्यतः अभी तक दुनिया के कुछ पहलुओं की व्याख्या, वर्णन या भविष्यवाणी करता है। हालाँकि, इन गुणों को ज्यादातर, वैज्ञानिक सिद्धांतों की विशेषताओं के रूप में पहचाना जाता है। प्राकृतिक विज्ञानों का व्याख्यात्मक और पूर्वानुमानात्क व्यवहार, सामाजिक विज्ञानों मे नहीं पाया जाता है क्योंकि बहुत सी अनियंत्रित और अप्रत्याशित शक्तियां राजनीतिक व सामाजिक जीवन को प्रभावित करती हैं तथा यही कारण है कि सामाजिक और राजनीतिक व्यवहार की शायद ही कभी हुबहू पुनरावृत्ति होती है। इन मसलों के प्रकाश में, कुछ विशेषज्ञों ने तर्क दिया है कि सामाजिक वैज्ञानिकों को प्राकृतिक विज्ञान की नकल करने की कोशिश नही करनी चाहिए, इसके बजाय, उन्हें अपने स्वयं के मानकों और प्रक्रियाओं को विकसित करना चाहिए। सामाजिक और राजनीतिक जीवन के सिद्धांतकारों के लिए, इसलिए अध्ययन के प्रयोजन के अनुसार महसूस करने और सोचने की क्षमता, उनके कार्य का महत्वपूर्ण घटक है।

पश्चिम में, राजनीतिक सिद्धांत एक ओर राजनीतिक दर्शन से उभरा और दूसरी ओर राजनीतिक विचार से। लेकिन, यह याद रखना चाहिए कि राजनीतिक सिद्धांत दोनों से अलग है। यह राजनीतिक दर्शन से इस अर्थ में भिन्न है कि यह व्यक्तिगत राजनीतिक अवधारणाओं के मध्य तार्किक संबंध स्थापित करने के लिए कम औपचारिक व व्यक्तिवादी दृष्टिकोण सहित कम चिंतित होता है। ऐतिहासिक रूप से कम केन्द्रित होने के आधार पर राजनीतिक सिद्धांत, राजनीतिक विचार से भिन्न है। अतः राजनीतिक सिद्धांत विचार का अनिवार्य रूप से मिश्रित तरीका है। यह न केवल आगमनात्मक तर्क और अनुभवजन्य सिद्धांत को समाविष्ट करता है, अपितु उन्हें मानकीय प्रयोजन के साथ जोड़ता है, इसलिए एक व्यावहारिक, कार्यवाई-मार्गदर्शक चरित्र प्राप्त करता है। यह उन चीजों के व्यापक, सुसंगत और सामान्य स्पष्टीकरण तक पहुंचने का प्रयास है, जिनके बारे में हम बात करते हैं जब हम राजनीति के बारे में चर्चा करते हैं। एक सुसंगत राजनीतिक सिद्धांतकार, सामाजिक परिस्थितियों और राजनीतिक अवधारणाओं के मध्य विचरण करने में सक्षम होता है। राजनीतिक सिद्धांत में राजनीतिक अभ्यास के ज्ञान का समुचित समावेश होना चाहिए। राजनीतिक सिद्धांत का एक दूसरा पहलू यह है कि यह हमेशा उन विशिष्ट स्थितियों और समस्याओं से परिभाषित होता है, जिन्हें राजनीतिक विचारकों ने देखा है। राजनीतिक सिद्धांत को समझने के लिए, हमें दोनों को यानि कि उन विचारों के इतिहास को समझने की आवश्यकता है जिनके आधार पर विचारकों ने वर्णित किया तथा जिन समस्याओं का सामना वे स्वयं करते हैं और जिसके लिए उनके कार्य को संबोधित किया जाता है। उस संदर्भ का अध्ययन जिसमें राजनीतिक सिद्धांत मूल रूप से उत्पन्न हुआ था, हमें समालोचनात्मक आकलन करने की अनुमति देता है कि उक्त सिद्धांत किस वर्ग विशेष के हितों को परिलक्षित करता है।

उपरोक्त चर्चा के आलोक में, **'राजनीतिक सिद्धांत की समझ'** के पाठ्यक्रम को तीन खंडों में विभाजित किया गया है।

खंड–प्रथम राजनीतिक सिद्धांत के बारे में परिचय देता है और इसकी दो इकाइयां हैं – राजनीतिक सिद्धांत क्या हैः इसके दो दृष्टिकोण–मानकीय तथा अनुभवजन्य, है और राजनीति क्या हैः राज्य व सत्ता (शक्ति) का अध्ययन। यह खंड विद्यार्थियों को राजनीतिक सिद्धांत, इसके ऐतिहासिक विकास और इसके अध्ययन के लिए प्रमुख दृष्टिकोणों के विचार से अवगत कराता है। यह खंड राजनीति, राज्य तथा सत्ता की अवधारणाओं में एक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

खंड-द्वितीय, राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोणों का परिचय कराता है और इसकी पाँच इकाइयाँ ये हैं–उदारवादी, मार्क्सवादी, रूढ़िवादी, नारीवादी तथा उत्तर-आधुनिक। इन सिद्धांतों पर विस्तार से चर्चा करने के अतिरिक्त, यह खंड उनका आलोचनात्क विश्लेषण भी करता है, ताकि समालोचनात्क सोच विकसित हो सके।

खंड–तृतीय, लोकतंत्र के व्याकरण के संबंध में है, जिसकी पाँच इकाइयाँ इस प्रकार हैं– लोकतंत्र का विचार, लोकतंत्र, प्रतिनिधित्व और उत्तरदायित्व, प्रतिनिधित्व लोकतंत्र तथा इसकी सीमाएं, भागीदारी और मतभेद और लोकतंत्र एवं नागरिकता। यह खंड लोकतंत्र की अवधारणा के बारे में विस्तार से चर्चा करता है, जिसमें विभिन्न प्रकार के लोकतंत्रों, प्रमुख सिद्धांतों, लोकतंत्र व मतभेद एवं नागरिकता जैसे मुद्दे शामिल हैं। खंड तीन लोकतंत्र के व्याकरण के बारे में है, जिसमें प्रत्येक इकाई में आपकी प्रगति की जांच के लिए अभ्यास दिए गए हैं, जो छात्रों को विषय के बारे में उनकी वैचारिक समझ को परखने में मद्द करेगा। पाठ्यक्रम के अंत में, आगे के विश्लेषण हेतु उपयोगी पुस्तकों की एक सूची स्व–अध्ययन के लिए दी गई है।

खंड 1

राजनीतिक सिद्धांत का परिचय

खंड 1 परिचय

वर्तमान पाठ्यक्रम का खंड-1 इसमें **राजनीतिक सिद्धांत का परिचय** कराया गया है और इसमें राजनीतिक सिद्धांत से संबंधित दो इकाइयाँ हैं। साधारणतः राजनीतिक सिद्धांत का अभिप्राय है कि 'राज्य की घटनाओं से संबंधित ज्ञान तत्व'। सिद्धांत का अर्थ है 'एक व्यवस्थित ज्ञान', जबकि 'राजनीति' 'जनता से जुडे मामलों 'को संदर्भित करती है। एक सार्थक राजनीतिक सिद्धांत न केवल वर्णन करता है, बल्कि आवश्यकता होने पर कुछ बदलावों का सुझाव भी देता है। राजनीतिक सिद्धांत पूर्ण अर्थों में राजनीति विज्ञान है, एवं सिद्धांत के बिना कोई विज्ञान नहीं हो सकता है। अतः, राजनीतिक सिद्धांत वैध और सटीक रूप से राजनीतिक विज्ञान के पर्याय के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इस संदर्भ में, **इकाई-1**, में राजनीतिक सिद्धांत क्या हैः दो दृष्टिकोण–मानकीय तथा अनुभवजन्य हैं, जिसमें राजनीतिक सिद्धांत की अवधारणा पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। यह राजनीतिक सिद्धांत, विचार एवं विचारधारा, विकास व राजनीतिक सिद्धांत के पुनरूद्धार और राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन करने के दृष्टिकोणों जैसे प्रसंगों के मध्य संबंधों को शामिल करता है। **इकाई-2**, राजनीति क्या हैः राज्य और शक्ति का अध्ययन, राज्य, राजनीति एवं उनके बीच संबंध, सत्ता और वैधता की अवधारणाओं से संबंधित है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1 राजनीतिक सिद्धांत क्या है: दो दृष्टिकोण– मानक और अनुभवजन्य*

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 परिचय

1.2 राजनीतिक सिद्धांत और अन्य पारस्परिक शर्तें

1.3 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

1.4 राजनीतिक सिद्धांत की परिभाषा की दिशा में

1.5 मूल सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्व

1.5.1 क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है?

1.5.2 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

1.6 राजनीतिक सिद्धांत के दृष्टिकोण

1.6.1 ऐतिहासिक दृष्टिकोण

1.6.2 मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण

1.6.3 अनुभवजन्य दृष्टिकोण

1.6.4 समकालीन दृष्टिकोण

1.7 सारांश

1.8 संदर्भ

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

यह इकाई राजनीतिक सिद्धांत की आवश्यकता से संबंधित है।

इस इकाई के माध्यम से आप यह जानने में सक्षम होंगे कि:

- अन्य समान शर्तों से राजनीतिक सिद्धांत अलग है;
- क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है, इसका परीक्षण; तथा
- राजनीतिक सिद्धांत का अध्ययन करने के लिए विभिन्न दृष्टिकोणों से परिचय।

1.1 परिचय

राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक विज्ञान के मूल क्षेत्रों में से एक है। शैक्षणिक अनुशासन के रूप में राजनीतिक सिद्धांत बिलकुल हाल ही में उभर कर आया है। इससे पहले इस उद्यम में जो लोग शामिल थे, वे खुद को दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक मानते थे। बौद्धिक परम्परा, जो कि तत्काल व्यावहारिक चिंता के क्षेत्र को बढ़ा देते हैं, के लिए राजनीतिक सिद्धांत एक उपयुक्त शब्द है और यह लोगों के सामाजिक रूप से सह-अस्तित्व को महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखता है। राजनीतिक सिद्धांत पूरी तरह से राजनीतिक विज्ञान था और सिद्धांत के बिना विज्ञान नहीं हो सकता। अतः राजनीतिक सिद्धांत वैध रूप से और सटीक रूप से राजनीतिक विज्ञान के पर्यायवाची के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

*डॉ. राजेन्द्र दयाल और डॉ. सतीश कुमार झा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

1.2 राजनीतिक सिद्धांत और अन्य पारस्परिक सम्बन्ध

राजनीतिक सिद्धांत और उसके समानार्थी शब्दों जैसे राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक दर्शन और राजनीतिक विचारधारा के बीच अंतर किया जा सकता है, यद्यपि बहुत से लोग विनिमेयता के अनुसार व्यवहार करते हैं। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक विज्ञान के बीच भेदभाव आधुनिक विज्ञान द्वारा बौद्धिक धारणाओं में सामान्य बदलाव के कारण उत्पन्न होता है। राजनीतिक विज्ञान ने राजनीति और राजनीतिक व्यवहार के बारे में व्यावहारिक सामान्यीकरण और कानून प्रदान करने की कोशिश की है।

राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक घटनाओं और संस्थानों और वास्तविक राजनीतिक व्यवहार पर दार्शनिक या नैतिक मानदंड को दर्शाता है।

एक अच्छी राजनीतिक व्यवस्था में प्रश्न उठना महत्वपूर्ण है जो कि एक बड़ा और अधिक मौलिक प्रश्न का हिस्सा है; मुख्य रूप से जीवन के आदर्श रूप को मनुष्य को बड़े समुदाय के अंदर विस्तार करना चाहिए।

तत्काल और स्थानीय प्रश्नों के उत्तर देने की प्रक्रिया में, यह स्थायी मुद्दों को संबोधित करता है, यही कारण है कि शास्त्रीय ग्रंथों का अध्ययन अभ्यास का एक महत्वपूर्ण घटक बनता है। राजनीतिक सिद्धांत के महान ग्रंथों में शानदार कार्यों की बात करें तो इसमें ज़रूरी महान साहित्यिक कार्य मिल जायेंगे, जो कि स्थानीय मामलों के बावजूद, जीवन और समाज की स्थाई समस्याओं से निपटता है। इसमें शाश्वत ज्ञान की उत्कृष्टता शामिल है और यह किसी भी संस्कृति, स्थान, लोगों या काल की विरासत नहीं है, बल्कि पूरी मानव जाति से सम्बंधित है।

विशिष्ट राजनीतिक सिद्धांतों को किसी घटना की सही या अंतिम समझ के रूप में नहीं माना जा सकता है। एक घटना का अर्थ नए दृष्टिकोण से हमेशा भविष्य की व्याख्याओं के लिए खुला रहता है। प्रत्येक की व्याख्या और विश्लेषण एक विशेष दृष्टिकोण या राजनीतिक जीवन से सम्बंधित होती हैं।

इसके अलावा, राजनीतिक सिद्धांत इसकी समीक्षा करने के प्रयासों में लगा रहता है, ताकि एक ऐसा राजनीतिक स्पष्टीकरण स्थापित किया जा सके जो सामान्य लोगों से ऊपर हो सके। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक विज्ञान के बीच कोई तनाव नहीं है, क्यूंकि वे अपनी सीमाओं और अधिकार क्षेत्र की शर्तों को अलग अलग निर्वाह करते हैं और टकराव उनके उद्देश्य में नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत विश्लेषण, विवरण, स्पष्टीकरण और आलोचना के उद्देश्य के लिए विचारों, अवधारणाओं और सिद्धांतों की आपूर्ति करता है, जो कि वापस रानजीतिक विज्ञान में समाविष्ट हो जाते हैं।

राजनीतिक दर्शन प्रश्नों के सामान्य उत्तर प्रदान करता है जैसे कि न्याय क्या है और विभिन्न अन्य अवधारणाओं से भी संबंधित है, क्या है और क्या होना चाहिए में भी यह भेद करने के साथ साथ राजनीति के बड़े मुद्दे से जुड़े प्रश्नों के सामान्य उत्तर प्रदान करता है। राजनीतिक दर्शन आदर्श राजनीतिक सिद्धांत का एक हिस्सा है, क्योंकि यह अवधारणाओं के बीच अंतर-संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है। शायद यह कहना सही होगा कि हर राजनीतिक दार्शनिक एक सिद्धांतवादी है, हालांकि हर राजनीतिक सिद्धांतवादी राजनीतिक दार्शनिक नहीं है। राजनीतिक दर्शन एक जटिल गतिविधि है, जो कि बिलकुल सही तरह से इस बात से समझी जा सकती है कि अनेक बड़े बड़े विशेषज्ञ विभिन्न विश्लेषण के लिए इसका अभ्यास करते हैं।

कोई भी दार्शनिक और किसी भी ऐतिहासिक युग से भी निष्कर्षात्मक रूप से ये परिभाषित नहीं कर सकता, हम इसका तात्पर्य कला के सन्दर्भ में ले सकते हैं कि कला के किसी भी कलाकार या कला के स्कूल से कहीं ज्यादा बढ़कर अभ्यास किया गया है।

राजनीतिक विचार पूरे समुदाय का विचार है जिसमें पेशेवर राजनेता, राजनीतिक टिप्पणीकार, समाज सुधारक और समुदाय के साधारण व्यक्ति जैसे स्पष्ट वर्गों के भाषणों के लेखन शामिल हैं।

विचार राजनीतिक ग्रंथों, विद्वानों के लेख, भाषण, सरकारी नीतियों और निर्णयों और कविताओं और गद्य के रूप में भी हो सकता है जो लोगों की व्यथा को प्रकट करते हैं। विचार समयबद्ध होते हैं, उदाहरण के लिए, बीसवीं शताब्दी का इतिहास। संक्षेप में, राजनीतिक विचारों में ऐसे सिद्धांत शामिल हैं जो राजनीतिक व्यवहार और मूल्यों का मूल्यांकन करने और इसे नियंत्रित करने के तरीकों को समझाने का प्रयास करते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत, विचार के विपरीत, एक व्यक्ति द्वारा अटकलों को संदर्भित करता है, जिसे हम स्पष्टीकरण के मॉडल के रूप में ग्रंथों में व्यक्त करते हैं। इसमें राज्यों, कानून, प्रतिनिधित्व और चुनाव सहित संस्थानों के सिद्धांत शामिल हैं। सर्वेक्षण का तरीका तुलनात्मक और व्याख्यात्मक है। राजनीतिक सिद्धांत सामान्य राजनीतिक जीवन से उत्पन्न दृष्टिकोण और कार्यों को समझाने और किसी विशेष संदर्भ में उनके बारे में सामान्यीकृत करने का प्रयास करता है, यह राजनीतिक सिद्धांत अवधारणाओं और परिस्थितियों के बीच या उनके साथ संबंधों से सम्बंधित में है। राजनीतिक दर्शन राजनीतिक सिद्धांतों और अवधारणाओं के बीच संघर्ष को हल करने या समझने का प्रयास करता है, जो कि निर्धारित की गई परिस्थितियों में समान रूप से स्वीकार्य दिखाई दे सकता है।

राजनीतिक विचारधारा एक व्यवस्थित और सभी को समाविष्ट करने वाला सिद्धांत है, जो कि मानव प्रकृति और समाज के पूर्ण और सार्वभौमिक रूप से लागू सिद्धांत को प्राप्त करने के एक विस्तृत कार्यक्रम के साथ-साथ उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। जॉन लॉक को अक्सर आधुनिक विचारधाराओं के जनक के रूप में वर्णित किया जाता है।

मार्क्सवाद भी इस तरह की विचारधारा का एक शानदार उदाहरण है जिसका तात्पर्य इस कथन में अभिव्यक्त होता है कि दर्शन का उद्देश्य विश्व को बदलना है न कि केवल व्याख्या करना। सभी राजनीतिक विचारधारा राजनीतिक दर्शन है, लेकिन ये कहना कि सभी राजनीतिक दर्शन राजनीतिक विचारधारा है, सत्य नहीं होगा। बीसवीं शताब्दी में फासीवाद, नाज़ीवाद, साम्यवाद और उदारवाद जैसी कई विचारधाराएं देखी गई हैं। राजनीतिक विचारधारा का एक विशिष्ट गुण यह है कि, जो कि राजनीतिक दर्शन के विपरीत, यह एक आदर्श समाज का एहसास करने के अपने उद्देश्य के कारण महत्वपूर्ण मूल्यांकन को रोकता है और हतोत्साहित करता है।

गेमिने और सेबाइन के अनुसार, राजनीतिक विचारधारा राजनीतिक सिद्धांत की अस्वीकृति है क्योंकि विचारधारा हाल ही की उत्पत्ति है, और सकारात्मकता के प्रभाव के तहत व्यक्तिपरक, अविश्वसनीय मूल्य वरीयताओं पर आधारित है।

गेमिने, इसके अलावा, राजनीतिक सिद्धांतवादी से एक प्रचारण में भेद का उल्लेख करते हैं। उनके अनुसार, हालांकि उन्हें स्वयं मुद्दों की अच्छी समझ है, पूर्णतः तत्काल उठने वाले प्रश्नों का ज्ञान है।

इसके अलावा, जर्मिनो, प्लेटो की तरह मत और ज्ञान के बीच अंतर करते हैं, और बाद में निश्चित रूप से एक राजनीतिक सिद्धांतवादी का प्रारंभिक बिंदु हो जाता है। प्रत्येक

राजनीतिक सिद्धांतकार की दोहरी भूमिका होती है; एक वैज्ञानिक और एक दार्शनिक और जिस तरह से वह अपनी भूमिकाओं को विभाजित करता है, वह अपने स्वभाव और हितों पर निर्भर करेगा। केवल दो भूमिकाओं को जोड़कर वह ज्ञान के लिए एक सार्थक तरीके से योगदान कर सकता है। एक सिद्धांत का वैज्ञानिक घटक सुसंगत और महत्वपूर्ण दिखाई दे सकता है, अगर लेखक के पास राजनीतिक जीवन के उद्देश्य की पूर्वकल्पना है। दार्शनिक आधार इस तरीके से प्रकट होता है जिस तरीके से वास्तविकता को चित्रित किया गया है। राजनीतिक सिद्धांत निराशाजनक और अनिच्छुक है। एक विज्ञान के रूप में, यह अव्यक्त रूप से या स्पष्ट रूप से चित्रित किए जा रहे निर्णयों को पारित करने की कोशिश किए बिना राजनीतिक वास्तविकता का वर्णन करता है। एक दर्शन के रूप में, यह आचरण के नियमों को निर्धारित करता है जो समाज में सभी के लिए एक अच्छा जीवन सुरक्षित बनाएगा, न कि केवल कुछ व्यक्तियों या वर्गों के लिए।

सिद्धांतवादी, किसी भी देश या वर्ग या पार्टी की राजनीतिक व्यवस्था में व्यक्तिगत रुचि नहीं लेते। इस तरह की रुचि से रहित, वास्तविकता की उनकी दृष्टि और अच्छे जीवन की उनकी छवि को प्रभावित नहीं किया जाएगा, और न ही उनका सिद्धांत विशेष होगा। विचारधारा का लक्ष्य या उद्देश्य समाज में सत्ता की एक विशेष प्रणाली को न्यायसंगत बनाना है। विचारधारा एक इच्छुक मामला है, उनकी दिलचस्पी इस उम्मीद से होती है कि एक नयी सत्ता का बँटवारा उभर कर आएगा, इसलिए चीजों को उसी रूप में या यथास्थिति की आलोचना भी इसी कारण से की जाती है। अरुचिपूर्ण चीज़ों को करने के बजाय, हम तर्कसंगतता से प्यार करते हैं। निष्पक्ष रूप से व्यवहार के बजाय, हमारे पास वास्तविकता की एक विकृत तस्वीर है।

1.3 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

राजनीतिक सिद्धांत में विकास हमेशा समाज में होने वाले परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है। विभिन्न समय पर उभरती चुनौतियों के जवाब में राजनीतिक सिद्धांत तैयार किए जाते हैं। राजनीतिक सिद्धांत के हेगेल का प्रतीकात्मक लक्षण इस सन्दर्भ में कि "मिनर्वा का उल्लू तब उड़ान भर लेता है जब अँधेरे की परछाई बढ़ जाती है", बहुत उपयुक्त है।

हालांकि हमें यह याद रखना अच्छा होगा कि राजनीतिक चिंतन, जो कि सामाजिक चुनौतियों के कारण भी उभरता है, समय के साथ साथ स्थान के साथ भी बंधा हुआ है और इसलिए, सिद्धांत से अलग है जो ऐसी बाधाओं को तोड़ता है और साबित करता है कि राजनीति की अद्भुत घटनाओं को अलग अलग प्रकृति और उत्पत्ति के सन्दर्भ में अच्छे से समझा जा सकता है और व्याख्या की जा सकती है।

ऐसा होता है, क्योंकि विचारधारों और पूर्वाग्रहों से सिद्धांतों को परिष्कृत और शुद्ध किया जाता है और कुछ नियम स्थापित हो जाते हैं, जो केवल कालातीत ही नहीं होते हैं, बल्कि उन्हें ज्ञान भी कहा जा सकता है।

राजनीतिक सिद्धांतकार, जब सिद्धांतीकरण में लिप्त होते हैं, अपने रुझानों और कल्पनाओं की पूर्ति के लिए विचारों का पालन या उसका अनुकरण ही नहीं करते हैं, बल्कि उन आदर्शों को भी खोजते हैं जिनके विचार जीवन को बेहतर बना सकते हैं। और इस उद्यम में, सिद्धांतवादी, बड़े पैमाने पर, ठोस राजनीतिक स्थिति से प्रेरित होते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास बताता है कि समाजों को प्रभावित करने वाली बीमारियों और रोगों ने सिद्धांत के साधनों को कमज़ोर किया है, जिसके माध्यम से विभिन्न स्वीकृत

सिद्धांतों और प्रथाओं और उनके पीछे की धारणाओं पर सवाल उठाये गए थे और भविष्य के लिए खाका तैयार किया गया था।

हालांकि, यह सच है कि सिद्धांत के लिए प्रोत्साहन हमेशा किसी प्रकार की विफलता और संबंधित दृढ़ विश्वास से आता है कि चीजों को बेहतर समझ के माध्यम से बेहतर किया जा सकता है और अंततः हल किया जा सकता है। इसलिए, राजनीतिक सिद्धांत का कार्य एक बेड़े की प्रतिक्रिया प्रदान करने और समझौता से संतुष्ट होने तक ही सीमित नहीं है। बल्कि, इसे समस्या की जड़ तक पहुंचना है और सिद्धांतों के वैकल्पिक नियमों के निर्माण के रूप में उपचार खोजना है। इसलिए, सिद्धांत पर किसी भी परियोजना के लिए एक 'दृष्टि' की आवश्यकता होती है जिसके माध्यम से एक सिद्धांतवादी न केवल हाथों की समस्याओं के बारे में सोच सकता है, बल्कि उनके आगे भी जा सकता है।

बात यह है कि कला या काव्य से राजनीतिक सिद्धांत को अलग किया जा सकता है। दृष्टि, प्रतिबिंब और अफवाहों के संदर्भ में, राजनीतिक सिद्धांत और कला और काव्य जैसे अन्य रचनात्मक गतिविधियों के बीच बहुत अंतर नहीं है। लेकिन जो बात एक राजनीतिक सिद्धांतकार से कवि को अलग करती है वह है उसका आग्रह और खोज, जो कि एक निश्चित प्रकार का होता है, जबकि एक कवि का अपना संसार होता है और काव्य के सहज स्वच्छंदता उसमें होती है। इसलिए, यह रचनात्मकता नहीं है, बल्कि चेतना है जो कि काव्य को सिद्धांत बनने की स्थिति से नकारती है।

1.4 राजनीतिक सिद्धांत की परिभाषा की दिशा में

राजनीतिक सिद्धांत अलग-अलग लोगों द्वारा विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। परिभाषाएं इसके गठबंधन तत्वों के जोर और समझ के आधार पर भिन्न होती हैं। राजनीतिक सिद्धांत की सेबाइन द्वारा दी गई प्रसिद्द परिभाषा यह है कि यह कुछ ऐसा है जिसमें विशेष रूप से तथ्यात्मक, कारण और मूल्यवान जैसे कारक शामिल हैं। हेकर के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत 'निराशाजनक और अनिच्छुक गतिविधि है। यह दार्शनिक और वैज्ञानिक ज्ञान का एक अंग है, चाहे वह मूल रूप से कब और कहाँ लिखा गया हो, इस दुनिया की हमारी समझ को बढ़ा सकता है जिसमें हम आज रहते हैं और जिसमें हम कल भी रहेंगे।

इसलिए, कोई यह कह सकता है कि राजनीतिक सिद्धांतों का हमारा अर्थ राजनीतिक घटनाओं के एक वर्ग के बारे में कुछ स्पष्टीकृत सिद्धांत के साथ प्रस्तावों का एक सुसंगत समूह है। इसका तात्पर्य है कि एक सिद्धांत, विचार के विपरीत, उस परिस्थिति में एक साथ ढेर सारी घटनाओं पर विचार नहीं कर सकता है, और केवल श्रेणी या प्रकार के मुद्दों से संबंधित होगा।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का उपयोग करें।
ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

2) राजनीतिक सिद्धांत की दूसरे अंतर-सम्बंधित शब्दों से अंतर करें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.5 मुख्य सैद्धांतिक अवधारणाओं के महत्व

एक पाठक जब पहली बार राजनीतिक सिद्धांत से परिचित होता है, तो यह सोच सकता है कि समाज के चरित्र और प्रकृति को समझने के लिए अमूर्त अवधारणाओं के बजाय संस्थाओं का अध्ययन करना पर्याप्त है। जबकि संस्थानों का अध्ययन तभी संभव है, जब किसी को यह एहसास हो कि संस्थागत व्यवस्था अलग-अलग समाज में भिन्न होती है क्योंकि वह अलग-अलग प्रकार के विचारों पर आधारित होती हैं। यह वास्तविकता हमें इस मामले के बीचों बीच में ले जाती है कि अधिक महत्वपूर्ण क्या है, वास्तविकता या विचार, तथ्य या अवधारणाएं क्या विचार वास्तविकता को प्रतिबिंबित करते हैं या वास्तविकता विचारों पर आधारित होती है?

1.5.1 क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत हो चुका है?

बीसवीं शताब्दी के मध्य में, कई पर्यवेक्षकों ने आसानी से राजनीतिक सिद्धांत की मृत्युलेख लिखी। कुछ ने इसकी गिरावट की बात की। दूसरों ने इसकी मौत की घोषणा की। किसी ने कहा कि राजनीतिक सिद्धांत आज मुसीबत से घिरा हुआ है। यह निराशाजनक विचार इसलिए फैला क्योंकि राजनीतिक सिद्धांत में शास्त्रीय परंपरा, बड़े पैमाने पर, अनुभवजन्य परीक्षण के नियंत्रण से परे मूल्य निर्णय के साथ मिली जुली है। मानक सिद्धांत की आलोचना 1930 के दशक में तार्किक सकारात्मकवादियों से हुई थी और बाद में व्यवहारवादियों द्वारा भी आलोचना की गई। ईस्टन का तर्क था कि चूंकि राजनीतिक सिद्धांत एक प्रकार के ऐतिहासिक रूप से सम्बंधित है, इसलिए यह अपनी रचनात्मक भूमिका खो चुका है। उन्होंने विलियम डनिंग, चार्ल्स एच. मक्लेवेन और जॉर्ज एम. सेबाइन को राजनीतिक सिद्धांत में इतिहासवाद को लाने के लिए दोषी ठहराया। इस तरह के राजनीतिक सिद्धांत ने छात्रों को मूल्यपरक सिद्धांत के गंभीर अध्ययन से वंचित कर दिया है और राजनीतिक सिद्धांत में इतिहास और दर्शन के तत्वों को अस्वीकार कर दिया।

ईस्टन ने आम तौर पर राजनीतिक सिद्धांत की गिरावट और विशेष रूप से ऐतिहासिकता में गिरावट के कारणों की जांच की। सबसे पहले, और सबसे महत्वपूर्ण, राजनीतिक वैज्ञानिकों के बीच प्रवृत्ति उनके समय के नैतिक प्रस्तावों के अनुरूप है जो रचनात्मक दृष्टिकोण के नुकसान की ओर अग्रसर हैं। इस बात पर ज़ोर देना है कि किसी के गुणों को उजागर करना और प्रकट करना जो कि यह दर्शाता है कि अब इन नैतिक मूल्यों की योग्यता की जांच करने की आवश्यकता नहीं है, लेकिन केवल उनके 'मूल, विकास और सामाजिक प्रभाव' को समझना है। मौजूदा मानों का समर्थन करने के लिए इतिहास का उपयोग किया जाता है। दूसरी बात, सिद्धांत को जो ख़ास बातें इतिहास से प्राप्त होती हैं उसके लिए नैतिक सापेक्षतावाद ज़िम्मेदार है। कुल मिलाकर, उन्होंने राजनीतिक सिद्धांत की गिरावट के चार कारण दिए– ऐतिहासिकतावाद, नैतिक सापेक्षतावाद, अति तथ्यात्मकतावाद और सकारात्मकतावाद।

1.5.2 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

1930 के दशक में, राजनीतिक सिद्धांत ने साम्यवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद के साम्राज्यवादी सिद्धांतों के विरोध में उदार लोकतांत्रिक सिद्धांत की रक्षा के उद्देश्य से विचारों के इतिहास का अध्ययन करना शुरू किया। लासवेल ने मानव व्यवहार को नियंत्रित करने के अंतिम उद्देश्य के साथ एक वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत स्थापित करने की कोशिश की, जिससे मरियम द्वारा दिए गए लक्ष्य और दिशा को आगे बढ़ाया गया। शास्त्रीय परंपरा के विपरीत, वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत निर्धारित करने के बजाए वर्णन करता है। पारंपरिक अर्थ में राजनीतिक सिद्धांत आरेण्ड्ट, थिओडोर अडोर्नो, मार्क्यूस और लियो स्ट्रॉस के कार्यों में जीवित था। अमेरिकी राजनीतिक विज्ञान के भीतर व्यापक विचारों से उनके विचार पूरी तरह से भिन्न थे, क्योंकि वे उदार लोकतंत्र, विज्ञान और ऐतिहासिक प्रगति में विश्वास करते थे। वे सभी राजनीति में राजनीतिक मसीहावाद और उदारवाद को अस्वीकार करते हैं। आरेण्ड्ट ने मुख्य रूप से मानव की विशिष्टता और जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित किया, जिसके साथ उन्होंने व्यवहारवाद में उनकी आलोचना शुरू की। उन्होंने तर्क दिया कि मानव प्रकृति में समानता के लिए व्यवहारिक खोज ने केवल इंसान को रूढ़िवादी बनाने में योगदान दिया है। स्ट्रॉस आधुनिक समय के संकट का समाधान करने के लिए शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत के महत्व की पुष्टि करते हैं। वह इस प्रस्ताव से सहमत नहीं हैं कि सभी राजनीतिक सिद्धांत प्रकृति में विचारधारात्मक हैं जो किसी दिए गए सामाजिक-आर्थिक हित को प्रतिबिंबित करते हैं, क्योंकि ज्यादातर राजनीतिक विचारक सामाजिक अस्तित्व में सही क्रम के सिद्धांतों को समझने की संभावना से प्रेरित होते हैं। एक राजनीतिक दार्शनिक को मुख्य रूप से सच्चाई में रुचि रखनी पड़ती है। पिछले दर्शनों को समेकन और स्थिरता पर नजर रखने के साथ अध्ययन किया जाता है। राजनीतिक सिद्धांत में शास्त्रों की रचना करने वाले लेखक बेहतर हैं क्योंकि वे प्रतिभाशाली थे और उनका लेखन नपा तुला होता था। स्ट्रॉस 'नए' राजनीतिक विज्ञान के तरीकों और उद्देश्यों की जांच करते हैं और उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत की तुलना में यह दोषपूर्ण था, विशेष रूप से अरस्तु की तुलना में। अरस्तु के अनुसार, एक राजनीतिक दार्शनिक या राजनीतिक वैज्ञानिक को निष्पक्ष होना चाहिए, क्योंकि उसके पास मानव की अंतिम अवस्था तक की अधिक व्यापक और स्पष्ट समझ होती है। राजनीतिक विज्ञान और राजनीतिक दर्शन समान हैं, क्योंकि सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं से युक्त विज्ञान दर्शन के समान है। अरस्तु का राजनीतिक विज्ञान भी राजनीतिक वस्तुओं का मूल्यांकन करता है, वास्तविक मामलों में दूरदृष्टि की स्वायत्तता का बचाव करता है और राजनीतिक कार्रवाई को अनिवार्यतः नैतिक रूप से देखता है। ये परिसर व्यवहारवाद से इनकार करते हैं, क्योंकि यह राजनीतिक दर्शन को राजनीतिक विज्ञान से अलग करता है और सैद्धांतिक और व्यावहारिक विज्ञान के बीच भेद को प्रतिस्थापित करता है। ऐसी मान्यता है कि व्यावहारिक विज्ञान सैद्धांतिक विज्ञानों से प्राप्त हुए हैं, लेकिन उस प्रकार से नहीं जिस प्रकार से शास्त्रीय परंपरा को दर्शाया जाता है। सकारात्मकवाद की तरह व्यवहारवाद विनाशकारी है, क्योंकि यह अंतिम सिद्धांतों के बारे में ज्ञान से इनकार करता है। उसका दिवालियापन स्पष्ट है, क्योंकि वह असहाय हैं, गलत से सही में अंतर करने में असमर्थ हैं, सर्वसत्तावाद के उदय के सन्दर्भ में अन्याय से न्याय के उदय के सन्दर्भ में देखता है। स्ट्रॉस ईस्टन का विरोध करते हैं और उनके ऐतिहासिकवाद पर आरोप लगाते हैं कि नया विज्ञान राजनीतिक सिद्धांत में गिरावट के लिए ज़िम्मेदार है, क्योंकि इसने मानक मुद्दों की समग्र उपेक्षा के कारण पश्चिम के सामान्य राजनीतिक संकट की ओर इशारा किया और उत्साहित किया। वोगेलिन राजनीतिक विज्ञान और राजनीतिक सिद्धांत को अविभाज्य मानते हैं और यह भी कि एक के बिना दूसरा संभव नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत विचारधारा, यूटोपिया या वैज्ञानिक पद्धति नहीं है, बल्कि व्यक्तिगत और समाज दोनों में सही क्रम की एक अनुभवी विज्ञान पद्धति है। इसे गंभीर और अनुभवजन्य

रूप से क्रम की समस्या को अलग करना होता है। सिद्धांत समाज में मानव अस्तित्व के बारे में केवल एक विचार मात्र नहीं है, बल्कि यह अनुभवों के एक निश्चित वर्ग की सामग्री की व्याख्या करके अस्तित्व के अर्थ को तैयार करने का प्रयास है। इसका तर्क मनमाने ढंग का नहीं है, लेकिन एकत्रित अनुभवों से इसकी वैधता प्राप्त करता है जिसमें इसे स्थायी रूप से अनुभवजन्य नियंत्रण के लिए संदर्भित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत की प्रासंगिकता के बारे में बहस पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 राजनीतिक सिद्धांत में दृष्टिकोण

सिद्धांतकारों द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले राजनीतिक सिद्धांत की विभिन्न धारणाओं को पहचानना और वर्गीकृत करना काफी मुश्किल है। कठिनाई सिद्धांतकारों के बीच अभ्यास करने के लिए प्रवृत्ति से उत्पन्न होती है, जिसमें वे विभिन्न अवधारणाओं और परंपराओं पर चित्रण शुरू करते हैं। यह और भी सत्य है, जैसा कि हम बाद में देखेंगे, समकालीन राजनीतिक सिद्धांत के साथ, जो इसके पहले थे। अतीत में, सिद्धांतवादियों ने कुछ हद तक सिद्धांत में अवधारणा की शुद्धता बनाए रखी- निर्माण और शायद ही कभी उनके द्वारा चुने गए ढांचे को आगे बढ़ाया। लेकिन यह समकालीन समय पर लागू नहीं होता है, जो सिद्धांत की एक दस्ते की पहचान है जो प्रकृति में संकर दिखाई देता है। लेकिन व्यापक रूप से कहना चाहें तो, राजनीतिक सिद्धांत में तीन अलग-अलग धारणाएं उभरीं जिनके आधार पर अतीत और वर्तमान दोनों सिद्धांतों को अवधारणाबद्ध, जांच और मूल्यांकन किया जा सकता है। वे हैंः ऐतिहासिक, सामान्य, और अनुभवजन्य।

1.6.1 ऐतिहासिक दृष्टिकोण

कई सिद्धांतकारों ने इतिहास से अंतर्दृष्टि और संसाधनों के आधार पर सिद्धांत - निर्माण का प्रयास किया है। सेबाइन ऐतिहासिक अवधारणा के मुख्य प्रतिपादकों में से एक हैं। उनकी राय में, एक प्रश्न, जैसे कि, राजनीतिक सिद्धांत की प्रकृति क्या है, का वर्णन वर्णनात्मक रूप से किया जा सकता है; इस तरह, सिद्धांत ने ऐतिहासिक घटनाओं और विशिष्ट परिस्थितियों का जवाब दिया है। दूसरे शब्दों में, इस परिप्रेक्ष्य में, राजनीतिक सिद्धांत स्थिति पर निर्भर हो जाता है, जिसमें प्रत्येक ऐतिहासिक स्थिति एक समस्या निर्धारित करती है, जो बदले में, सिद्धांत द्वारा तैयार किए गए समाधानों का ख्याल रखती है। राजनीतिक सिद्धांत की यह अवधारणा परंपरा की तुलना में अलग है। कोबबान भी यह मानते हैं कि परंपरागत विधि, जिसमें इतिहास का बोध पूरी तरह से दिया जाता है, राजनीतिक सिद्धांत की समस्याओं पर विचार करने का सही तरीका है। यह सच है कि अतीत, सिद्धांत निर्माण के हमारे प्रयास में एक मूल्यवान गाइड के रूप में कार्य करता है, और हमें सिखाता है कि

हम अपनी मौलिकता के बारे में भी बहुत अधिक सुनिश्चित न हों। यह इस तरफ भी इशारा करता है कि अब यह संभव हो गया है कि अन्य तरीकों पर भी प्रकाश डाला जाए जो कि केवल फैशनेबल और प्रभावशाली नहीं होगा। ऐतिहासिक ज्ञान हमें पिछली पीढ़ियों की असफलताओं के बारे में भी संवेदनशील बनाता है और वर्तमान के सामूहिक ज्ञान के साथ संबंध रखता है और हमारे अंदर कल्पनाशीलता को बढ़ावा देता है।

इसके ऊपर और पहले, ऐतिहासिक अवधारणा भी हमारे मानक दृष्टि में महत्वपूर्ण योगदान देती है। विचारों का इतिहास हमें बता सकता है कि हमारा सामाजिक और राजनीतिक ब्रह्मांड उन चीज़ों का एक उत्पाद है जिनकी जड़ अतीत में है। और उन्हें बेहतर ढंग से हमें पता चलेगा कि हमारे पास कैसे कुछ निश्चित मूल्य, मानदंड और नैतिक अपेक्षाएं हैं और वे कहां से आए हैं। इस तरफ की समझने की क्षमता हमारे अंदर होने के कारण ही, इन मूल्यों से पूछताछ करना और उनकी उपयोगिता का गंभीर आंकलन करना संभव है। लेकिन इस धारणा के साथ अंधा लगाव मूर्खता के बिना नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत नामक योजना की नवीनता यह है कि इसकी प्रत्येक विशिष्ट स्थिति अद्वितीय है, नयी चुनौतियों के रहस्य से जुड़ा है। इसलिए, अतीत के मूल्य को कभी-कभी समाप्त कर दिया जाता है और यहां तक कि बाधा भी हो सकती है, अगर कोई इस पहलू से अनजान है। इसलिए, एक निश्चित स्तर से परे राजनीतिक सिद्धांत में इस दृष्टिकोण की उपयोगिता संदिग्ध है क्योंकि यह हमेशा पुराने समय से विचारों से बाहर निकलने के लिए तैयार है। विचारों के सूचक मूल्य रहते हैं, लेकिन सैद्धांतिक कार्य काफी कम हो जाता है। इसलिए, राजनीतिक सिद्धांत में इस दृष्टिकोण की उपयोगिता एक निश्चित स्तर से परे है और यह संदिग्ध है, क्योंकि यह हमेशा पुराने समय से पुराने विचारों से बंधा हुआ है।

1.6.2 मानक अथवा निर्देशात्मक दृष्टिकोण

राजनीतिक सिद्धांत में मानक धारणा विभिन्न नामों से जानी जाती है। कुछ लोग इसे दार्शनिक सिद्धांत कहते हैं, जबकि अन्य इसे नैतिक सिद्धांत के रूप में संदर्भित करते हैं। मानक अवधारणा इस धारणा पर आधारित है कि सिद्धांत और उद्देश्य, तर्क, अंतर्दृष्टि और अनुभवों की सहायता से तर्क, उद्देश्य और अंत के संदर्भ में दुनिया और इसकी घटनाओं का अर्थ लिया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, यह मूल्यों के बारे में दार्शनिक अटकलों की एक परियोजना है। ऐसे प्रश्न, जो मानकवादियों द्वारा पूछे जाते हैं, होंगेः राजनीतिक संस्थानों का अंत क्या होना चाहिए? व्यक्तिगत और अन्य सामाजिक संगठनों के बीच संबंधों को क्या सूचित करना चाहिए? समाज में कौन सी व्यवस्था मॉडल या आदर्श बन सकती है और नियमों और सिद्धांतों को किस पर शासन करना चाहिए? कोई चाहे तो यह कह सकता है कि उनकी चिंताएं नैतिक हैं और इसका उद्देश्य आदर्श प्रकार का निर्माण करना है। इसलिए, ये सिद्धांतवादी ही हैं जिन्होंने हमेशा अपनी शक्तिशाली कल्पना के माध्यम से राजनीतिक विचारों के क्षेत्र में 'यूटोपिया' की कल्पना की है। सामान्य राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक दर्शन की ओर बहुत ज़्यादा निर्भर करता है, क्योंकि इससे इसके अच्छे जीवन का ज्ञान प्राप्त होता है और इसे पूर्ण मानदंड बनाने के अपने प्रयास में ढांचे के रूप में भी उपयोग किया जाता है। असल में, उनके औपचारिक हथियारों को राजनीतिक दर्शन से ले लिया जाता है और इसलिए, वे हमेशा अवधारणाओं के बीच अंतर-संबंध स्थापित करने की कोशिश करते हैं और घटनाओं के साथ-साथ उनके सिद्धांतों में सुसंगतता की तलाश करते हैं, जो दार्शनिक दृष्टिकोण के विशिष्ट उदाहरण हैं। लियो स्ट्रॉस ने दृढ़ता से सिद्धांत के लिए मामले की वकालत की है और तर्क दिया है कि प्रकृति द्वारा राजनीतिक चीजें अनुमोदन या अस्वीकृति के अधीन हैं और अच्छे या बुरे और न्याय या अन्याय को छोड़कर किसी भी अन्य शर्तों में उनका न्याय करना मुश्किल है। लेकिन मानदंडवादियों के साथ

समस्या ये है कि वे मूल्यों का मूल्यांकन करते समय, वे उन्हें सार्वभौमिक और पूर्ण के रूप में चित्रित करते हैं। उन्हें एहसास नहीं है कि भलाई के लिए पूर्ण मानक बनाने की उनकी इच्छा बिना संकट के नहीं है। और वह नैतिक मूल्य समय और स्थान के सापेक्ष एक भारी व्यक्तिपरक सामग्री के साथ हैं, जो पूर्ण मानक के किसी भी निर्माण की संभावना को रोकता है। हमें अच्छी तरह से यह याद रखना होगा कि यहां तक कि एक राजनीतिक सिद्धांतवादी भी दुनिया के आंकलन में एक व्यक्तिपरक साधन है और यह अंतर्दृष्टि कई सशर्त कारकों से हैं, जो प्रकृति में विचारधारात्मक हो सकती हैं।

अनुभवजन्य सिद्धांत के प्रतिपादकों ने मानकवाद की निम्न बात के लिए आलोचना की:

1) मूल्यों की सापेक्षता

2) नैतिकता और मानदंडों का सांस्कृतिक आधार

3) प्रतिष्ठानों में वैचारिक विषय सूची, एवं

4) परियोजना का सार और यूटोपियन प्रकृति

लेकिन अतीत के गहराई में, जो मानक सिद्धांत का ज़ोरदार समर्थन किया करते थे, उन्होंने हमेशा अपने सिद्धांतों को अपने समय की वास्तविकता की समझ के साथ जोड़ने की कोशिश की। हाल के दिनों में, नकारात्मक सिद्धांत के भीतर पुरानी संवेदनशीलता फिर से उभरी है और अच्छे जीवन और अच्छे समाज के भाव को विधिवत और अनुभवजन्य चतुरता से मेल किया गया है। जॉन रॉल्स की पुस्तक 'ए थ्योरी ऑफ़ जस्टिस' एक ऐसा मामला है जो अनुभवजन्य निष्कर्षों में तार्किक और नैतिक राजनीतिक सिद्धांत को सहारा देने का प्रयास करता है। रॉल्स, अपनी कल्पना के साथ, वितरण न्याय और कल्याणकारी राज्य के बारे में असली दुनिया की चिंताओं के साथ मानक दार्शनिक तर्कों को जोड़ने के लिए 'मूल स्थिति' बनाते हैं।

1.6.3 अनुभवजन्य दृष्टिकोण

बीसवीं शताब्दी में जिस राजनीतिक सिद्धांत ने प्रभुत्व किया, वह आदर्शता नहीं है, लेकिन एक और अवधारणा जिसे अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत के रूप में जाना जाता है, जो कि अनुभवजन्य अवलोकनों से सिद्धांतों को उत्पन्न करता है। अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत उन सिद्धांतों को ज्ञान की स्थिति प्रदान करने से इंकार कर देता है, जो मूल्य निर्णय में शामिल होते हैं। स्वाभाविक रूप से, इसलिए, मानक राजनीतिक सिद्धांत को केवल 'वरीयताओं' और 'मत की अभिव्यक्ति' के बयान के रूप में उजागर किया जाता है। मूल्य-मुक्त सिद्धांत के लिए अभियान राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र को वैज्ञानिक और उद्देश्य के क्षेत्र में शुरू करने के लिए शुरू किया गया और इसलिए, कार्य के लिए एक और अधिक विश्वसनीय मार्गदर्शन करना। इस नयी स्थिति निर्धारण को सकारात्मकवाद के रूप में जाना जाने लगा। सकारात्मकता के उद्भव के तहत, राजनीतिक सिद्धांतकारों ने सिद्धांत के आधार पर राजनीतिक घटनाओं के बारे में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए तैयार किया जिसे अनुभवी रूप से सत्यापित और साबित किया जा सकता था। इस प्रकार, उन्होंने समाज के प्राकृतिक विज्ञान को बनाने का प्रयास किया और इस प्रयास में, दर्शन को विज्ञान का एक मात्र जोड़ा गया। सिद्धांत के इस तरह के एक स्पष्टीकरण ने एक सिद्धांतवादी की भूमिका को एक अनिच्छुक पर्यवेक्षक के रूप में चित्रित किया, सभी प्रतिबद्धताओं को समाप्त कर दिया और सभी मूल्यों को निकाला।

राजनीतिक सिद्धांत में यह अनुभवजन्य परियोजना ज्ञान के अनुभववादी सिद्धांत पर आधारित थी, जिसका दावा है कि सत्य और झूठ का गठन करने के लिए पूर्ण विकसित मानदंड है। इस मानदंड का सार प्रयोग और सत्यापन सिद्धांत में दर्ज है।

जब राजनीतिक सिद्धांत इस प्रभाव में पड़ रहा था, तो एक तथाकथित क्रांति शुरू हुई और 'व्यवहारिक क्रांति' के रूप में लोकप्रिय हो गई। यह क्रांति 1950 के दशक में राजनीतिक सिद्धांत के भीतर एक प्रभावशाली स्थिति तक पहुंच गई और नई सुविधाओं की वकालत करके अध्ययन और अनुसंधान के पूरे क्षेत्र को अपनी परिधि में ले लिया। इसमें शामिल थेः

1) विश्लेषण में मात्रात्मक तकनीक को प्रोत्साहित करना
2) मानक ढांचे के उन्मूलन और अनुभवजन्य अनुसंधान के प्रचार जो सांख्यिकीय परीक्षणों के लिए अतिसंवेदनशील हो सकते हैं
3) विचारों के इतिहास की स्वीकृति और अस्वीकृति
4) सूक्ष्म अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना क्योंकि यह अनुभवजन्य उपचार के लिए अधिक सक्षम था
5) विशेषज्ञता का गौरवगान
6) व्यक्ति के व्यवहार से डाटा प्राप्त करना और
7) मूल्य-मुक्त शोध के लिए आग्रह करना

वास्तव में, व्यवहारिक वातावरण को एक विरोधी सिद्धांत की अवस्था द्वारा अधिभारित किया गया था और जिन लोगों ने परंपरागत अर्थ में सिद्धांत पर हमला किया था, वो केवल एक का दिन था। थ्योरी को हास्यास्पद बना दिया गया था और विचारधारा को, अमूर्तता, आध्यात्मिक तत्वों और यूटोपिया के समानार्थी बना दिया गया था। कुछ साहसीवादियों ने उद्यम के रूप में सिद्धांत के लिए विदाई की भी वकालत की। वस्तुनिष्ठ ज्ञान प्राप्त करने के उत्साह में, उन्होंने वास्तविकता के एक पहलू को भी कम कर दिया और विचार और वास्तविकता के बीच भेद को धुंधला कर दिया। इस प्रकार, उन्होंने जल्द ही विज्ञान के कुछ दार्शनिकों के क्रोध और आग का वे लोग शिकार हुए जिन्होंने विज्ञान के उत्तर-सकारात्मकवादी दृष्टिकोण के लिए एक नई दूरदर्शिता की पेशकश की। कार्ल पॉपर ने वैज्ञानिक ज्ञान के एक मानदंड के रूप में 'मिथ्याकरण' के सिद्धांत को निर्धारित करके नई अवस्था को जन्म दिया और तर्क दिया कि सभी ज्ञान अनुमानित, टिकाऊ और अंतिम सत्य से बहुत दूर थे। वास्तविक मोड़ या सफलता विज्ञान के दर्शन में तब आई, जब थॉमस कुन्ह, इम्रे लाकाटोस और मैरी हेसे ने तथाकथित वैज्ञानिक सिद्धांत को ध्वस्त कर दिया। कुन्ह की किताब, "वैज्ञानिक क्रांति की संरचना", ने सकारात्मक सिद्धांत के शोक और विफलताओं को बाहर निकालने का मार्ग प्रशस्त किया यह दर्शाता है कि कैसे सभी विचार अंतर-व्यक्तिपरक संचार के साधन के रूप में विचारशील और व्याख्या पर निर्भर थे। कुन्ह ने जोरदार तर्क दिया कि यह न केवल तर्कहीन सम्मेलन था जो कि शब्दार्थगत ढांचे के निर्माण के पीछे छिपे हुए थे, लेकिन व्याख्या और आलोचना द्वारा तैयार तर्कसंगत व्याख्यान द्वारा भी सूचित किया गया था।

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीतिक सिद्धांत की अनुभवजन्य और मानक धारणाओं के बीच अंतर करें।

.....

.....

.....

1.6.4 समकालीन दृष्टिकोण

समकालीन राजनीतिक सिद्धांत ने 1980 और 90 के दशक में बौद्धिक दृश्य पर अपनी उपस्थिति बनाई। ज्यादातर सिद्धांत में स्थापित परंपराओं के खिलाफ प्रतिक्रिया के रूप में और ज्ञान और विज्ञान जैसे प्रबोधन की श्रेणियां डालीं जिस पर कि राजनीतिक सिद्धांत में सभी परंपराओं को एक गंभीर और खोज आलोचना से बांधे हुए थे। उन्होंने कई पहलुओं को लाया जिन्हें बारीकी से जांच के तहत राजनीतिक सिद्धांत द्वारा सत्य की नींव के रूप में अपना लिया गया और नए सामाजिक और राजनीतिक संसार को समझने और विचार करने के लिए नए सिद्धांतों को निर्धारित किया गया जिनमें से कुछ ने "उत्तर-आधुनिक स्थिति" को बनाये रखा। हालांकि, यह विश्लेषण के एक व्यापक ढाँचे के तहत आज दिखाई देने वाले विभिन्न सैद्धांतिक रुझानों की दमन करने के लिए व्यक्तिपरक होगा। उदाहरण के लिए, सांप्रदायिकता और बहुलसंस्कृतिवाद के साथ सामूहिकतावाद और आधुनिकवाद के बाद चर्चा करना उनके खिलाफ बौद्धिक अत्याचार और उनकी चिंताओं और प्रतिबद्धताओं के लिए होगा। उदहारण के तौर पर, समुदायवाद और बहुलसंस्कृतिवाद के साथ उत्तर-संरचनावाद और उत्तर-आधुनिकवाद पर उनकी चिंताओं और प्रतिबद्धताओं के खिलाफ बौद्धिक अत्याचार के साथ मिलकर विचार विमर्श करना क्योंकि उनके इतिहास, उनकी मानक चिंता के साथ-साथ सैद्धांतिक उपकरण और अनुभवजन्य संदर्भों में एक बड़ी असमानता और मोड़ है। लेकिन फिर भी कोई सैद्धांतिक क्षेत्र की योजना बना सकता है जिस पर राजनीतिक सिद्धांत के साथ उनकी भागीदारी होती है। व्यापक जोर जो कई समकालीन सिद्धांतकारों और सिद्धांतों को एक साथ लाता है, दोनों को एक साथ निम्नलिखित के तहत रख सकते हैं:

क) **सार्वभौमिकता के लिए विपक्ष**

समकालीन समय में राजनीतिक सिद्धांतीकरण अतीत के राजनीतिक सिद्धांत के सार्वभौमिक दावों के अधीन हो चुका है, इस परंपरा के बावजूद भी कि वे महत्वपूर्ण सूक्ष्म परीक्षण से संबंधित थे। उन्होंने सामाजिक और अस्थायी संदर्भ के बिना उदार सार्वभौमिकता प्रकट की है, और उनकी राय में, पश्चिमी समाज के अनुभव पर आधारित गुप्त 'विशिष्टता' ने सार्वभौमिक मूल्यों और मानदंडों के रूप में स्वांग रचा है। वे तर्क देते हैं कि सार्वभौमिक सिद्धांतों के लिए अपील मानकीकरण के समान हैं; इसलिए, न्याय का उल्लंघन जो किसी विशेष समुदाय या जीवन के रूप में निहित हो सकता है और जो अपने मूल्यों और मानक सिद्धांत को सम्मिलित कर सकता है। हाल के दिनों में सांप्रदायिक सिद्धांत और बहुलसंस्कृतिवाद सिद्धांत ने इसे काफी बल दिया है और इस तथाकथित सार्वभौमिक सिद्धांतों को 'विशिष्टतावादी' का केंद्र कहा गया, जिसने हमेशा मानव जाति के एकमात्र दृष्टिकोण के रूप में 'अच्छाई' का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

ख) **बड़े विवरणों की आलोचना**

उदारवादी और मार्क्सवादी, दोनों किस्मों के बड़े विवरण इस आधार पर आलोचना के घेरे में उभर कर आ गये हैं कि उदारवाद और मार्क्सवाद द्वारा वास्तविकता और सत्य की कोई अतिव्यापी या अनुवांशिक नींव नहीं है, क्यूंकि समकालीन सिद्धांतों में से कुछ को 'मूल सिद्धांत विरोधी' घोषित किया गया है, जैसे, राज्य संप्रभुता और शक्ति। उनके साथ निष्पक्षता होने पर, वे सभी मूलभूत बातें अस्वीकार नहीं करते हैं, बल्कि केवल अनुवांशिक बातें अस्वीकार करते हैं। बाद के आधुनिकतावादी बड़े विवरणों पर हमला करने में सबसे आगे हैं और तर्क देते हैं कि उद्देश्य पूर्व निर्धारित वास्तविकता या एक उद्देश्यपूर्ण सामाजिक वस्तु नहीं है जो इस तरह के बड़े विवरणों और उनके प्रारूपों का समर्थन कर सकता है।

ग) **उत्तर-सकारात्मकवाद**

यह राजनीतिक सिद्धांत में व्यवहारवादियों द्वारा समर्थित सामाजिक विज्ञान में मूल्य तटस्थता के साथ पहले की प्रतिबद्धता का सबूत है। समकालीन सिद्धांत मूल्य विहीन संस्थाओं को बेकार कहते हैं और मानते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत एक स्वाभाविक रूप से प्रामाणिक और राजनीतिक रूप से लगी हुई परियोजनाएं हैं, जो कि भविष्य के लिए तैयारियों और एक दूरदृष्टि प्रदान करने वाला माना जाता है।

घ) **अनुभवजन्य और तुलनात्मक**

समसामयिक सिद्धांतवादियों के बीच उत्तर-सकारात्मक जोर उन्हें किसी सामान्यीकरण के प्रयास से पहले अनुभवजन्य और तुलनात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता की वकालत करने से नहीं रोकता है। बहुलसंस्कृतिवाद एक ऐसा उदाहरण है, जो कि विषय वस्तु के प्रति संवेदनशील है। वास्तव में, इस तरह के अनुभवजन्य – तुलनात्मक कार्यप्रणाली संस्कृतियों और महाद्वीपों में व्यापक सामान्यीकरण पर एक जांच की तरह होगी। समकालीन राजनीतिक सिद्धांत से आने वाली नई अंतर्दृष्टि के बावजूद, वे कई कमजोरियों से पीड़ित हैं। शास्त्रीय राजनीतिक सिद्धांत के विपरीत, अभी तक तुलनात्मक-आनुभविक जांच नहीं हुई है और सिद्धांतकारों के बीच अन्य सिद्धांतकारों का अनुकरण करने की प्रवृत्ति बहुत ज़्यादा है। आदर्शवादी उद्यम तभी उपयोगी हो सकता है जब वह वास्तविकता से बंधा हो। इसलिए, समाज और राजनीति की वास्तविक चुनौती अनुभवजन्य वास्तविकता के आधार पर मानक सिद्धांत में निहित है। यह एकमात्र तरीका है, जिसमें केवल सामान्यीकरण के साथ एक वैध राजनीतिक सिद्धांत उभर सकता है, जो आधुनिकतावादी दृष्टिकोण और उसकी सापेक्षता और प्रसार की कमजोरियों को भी दूर करेगा जो हमेशा राजनीतिक परियोजनाओं के लिए जन्मजात नहीं होते हैं। इससे लाभ भी हो सकता है, शेल्डन वोलिन इसे 'महाकाव्य सिद्धांत' कहते हैं।

बोध प्रश्न 4

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से करें।

1) कुछ व्यापक चुनौतियों पर चर्चा करें, जो समकालीन सिद्धांतकारों को एक साथ लाते हैं।

.....

.....

.....

1.7 सारांश

चूंकि हमारे पास राजनीतिक सिद्धांत की अलग-अलग अवधारणाएं हैं, इसलिए वे विभिन्न परंपराओं में अलग-अलग अर्थ प्राप्त करते हैं। हमने देखा है कि राजनीतिक सिद्धांत क्यों उभरता है और यह कैसे राजनीति में मानव हस्तक्षेप को सुविधाजनक बनाकर इतिहास को आकार देता है और कैसे तय करता है। सिद्धांतकारों द्वारा आयोजित की जाने वाली विभिन्न अवधारणाओं पर भी चर्चा की गई है और उनकी दिक्कतों पर प्रकाश डाला गया है। समकालीन उद्यम, जो सामाजिक और राजनीतिक वास्तविकता के बारे में हमारी समझ में नई दिशाएं खोलने का दावा करता है, इसकी परिसीमाओं के साथ चर्चा की गई है। पिछली

चर्चा से स्पष्ट रूप से उभरता है कि दर्शन और विज्ञान राजनीतिक सिद्धांत नामक परियोजना में एक-दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते हैं, यदि एक दूरदृष्टि मानव जाति की मुक्ति के लिए एक मिशन है और यहां तक कि किसी चीज़ की अनुपस्थिति का उद्देश्य 'अच्छा' या उद्देश्य 'सत्य' है तो सिद्धांत के लिए व्यावहारिक आधार को अपनाने का प्रयास किया जाना चाहिए। यह न केवल वांछनीय है, बल्कि व्युत्पन्न भी है। राजनीतिक सिद्धांत में कोई भी परियोजना जो कठोर आलोचना के अधीन होकर प्रामाणिक सोच के साथ अनुभवजन्य निष्कर्षों को एकीकृत करती है, राजनीतिक सिद्धांत में रचनात्मकता के लिए द्वार खोल सकती है जिसके आधार पर हम भविष्य में मार्गनिर्देशन कर सकते हैं।

1.8 संदर्भ

बैरी, बी, (1989), द सटरेंज डेथ ऑफ पाल्टिकल फिलासफी इन एसेस इन पाल्टिकल थियोरी, ऑक्सफोर्डः क्लेरेंडन प्रेस डेमोक्रेसी पावर एंड जस्टिस

बर्लिन, एस. आई., (1994), इन पाल्टिकल थ्योरी स्टिल एक्सिट इन? 'पी. लैसलेट और डब्ल्यू जी रनसीमन, फिलासफी, पालिटकस एंड सोसायटी, 2 सीरीज़ (संस्करण) ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल

लैस्लेट, पी और डब्ल्यू जी रनसीमन (1957), फिलासफी, पाल्टिकस एंड सोसायटी, ऑक्सफोर्डः ब्लैकवेल

सबाइन, जी. एच. (1939), वट इज पाल्टिकल थ्योरी, जर्नल ऑफ पाल्टिकस, Vol 1, No.1

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदुओं पर प्रकाश डाला जाना चाहिए-
   - कैसे राजनीतिक सिद्धांत राजनीतिक राजनीति विज्ञान का पर्याय है।
   - राजनीतिक सिद्धांत और राजनीतिक दर्शन के अंतर-संबंध पर चर्चा करें।
   - राजनीतिक सिद्धांत पर हेगेल के उद्धरण पर विस्तृत चर्चा करें।
   - राजनीतिक सिद्धांत को परिभाषित करने में भिन्नता।
2) आपके उत्तर में यह व्याख्या होनी चाहिए कि यह राजनीतिक विज्ञान, राजनीतिक विचार और राजनीतिक विचारधारा से अलग कैसे है।

बोध प्रश्न 2

1) इस बहस की जांच करें कि क्या राजनीतिक सिद्धांत मृत है और लेवी स्ट्रॉस के विचारों पर भी चर्चा करें।

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर को स्पष्ट तथ्य-द्वंदवाद को उजागर करना चाहिए और उनकी ताकत और कमजोरियों का उल्लेख करना चाहिए।

बोध प्रश्न 4

1) सार्वभौमिकता के विरोध को उजागर करें, भव्य आख्यानों की आलोचना, प्रत्यक्षवाद के बाद और अनुभवजन्य और तुलनात्मक पर ध्यान केंद्रित करें।

इकाई 2 राजनीति क्या है: राज्य और शक्ति का अध्ययन*

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 परिचय

2.2 राजनीति एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में

- 2.2.1 राजनीति को सटीक परिभाषित करना मुश्किल है
- 2.2.2 राजनीति की प्रकृति
- 2.2.3 राजनीतिः मानव स्थिति की एक अपरिहार्य विशेषता है

2.3 राजनीति क्या है?

2.4 राज्य क्या है?

- 2.4.1 राज्यः राजनीतिक संस्थानों/सामाजिक संदर्भ के कारण मतभेद
- 2.4.2 राज्य पर राल्फ मिलिबैंड के विचार
- 2.4.3 राज्य के प्रकार

2.5 राजनीति एक रोज़गार के रूप में

2.6 शक्ति का वैध उपयोग

- 2.6.1 वैधता पर मैक्स वेबर के विचार
- 2.6.2 वैधताः राजनीति विज्ञान का केंद्रीय मुद्दा
- 2.6.3 'अवैध्यता' की प्रक्रिया
- 2.6.4 सहमति में हेरफेर
- 2.6.5 राज्य प्रशासन के कार्मिकः कुलीन वर्ग

2.7 सारांश

2.8 संदर्भ

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

स्नातक स्तर की डिग्री में राजनीतिक सिद्धांत में नए पाठ्यक्रम के पहले भाग की यह परिचयात्मक इकाई आपको राजनीति के मूल अर्थ के बारे में बताती है और इस प्रकार से, राजनीति विज्ञान के अनुशासन के मूल सिद्धांतों के बारे में भी बताती है। इस इकाई के माध्यम से आप यह समझाने में सक्षम होंगे कि:

- राजनीति क्या है;
- राज्य का अर्थ;
- शक्ति की अवधारणा का वर्णन और व्याख्या; तथा
- वैधीकरण और प्रत्यायोजन पर चर्चा।

2.1 परिचय

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य 'राजनीतिक' की अवधारणा को समझना है। राजनीतिक का सार एक ऐसी व्यवस्था को खोज लाना है जिसे लोग अच्छा मानते हैं। राजनीति शब्द ग्रीक

*डॉ. मनोज सिन्हा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शब्द 'पॉलिस' से लिया गया है जिसका अर्थ है 'नगर' और 'राज्य'। प्राचीन यूनानियों के बीच राजनीति सोच, भावना और सबसे ऊपर एक की ही संगती से सम्बंधित होने का ये एक नया तरीका था। नागरिकों के रूप में वे सभी समान थे, हालांकि नागरिकों को उनकी धन, बुद्धि, आदि के संदर्भ में विभिन्न स्थितियों में भिन्नता थी। यह राजनीति की अवधारणा है जो नागरिकों को तर्कसंगत बनाती है। राजनीति इस नई चीज़ के लिए विशिष्ट गतिविधि है जिसे नागरिक कहा जाता है। राजनीति का एक विज्ञान संभव है, क्योंकि राजनीति स्वयं नियमित तरीके का पालन करती है, भले ही यह मानव प्रकृति की दया पर है जहां से यह उत्पन्न होता है।

ग्रीक राजनीतिक अध्ययनों ने संविधानों के साथ काम किया और मानव प्रकृति और राजनीतिक संघों के बीच संबंधों के बारे में सामान्यीकरण किया। शायद, इसका सबसे शक्तिशाली घटक आवर्तक चक्र का सिद्धांत था। तानाशाही व्यवस्था बिगड़ कर अत्याचार का रूप लेती है, अत्याचारों को अभिजात वर्ग द्वारा उखाड़ फेंका जाता है, जो कि आबादी का शोषण करने वाले कुलीन वर्गों में बदल जाता है, जो कि बाद में लोकतंत्रों द्वारा उखाड़ फेंके जाते हैं, जो कि बदले में भीड़ शासन की असहनीय अस्थिरता में बदल जाते हैं, जिसके कारण कुछ शक्तिशाली नेता खुद को राजा बना लेते हैं और यह चक्र फिर से शुरू होता है। यह अरस्तू का विचार है कि लोकतंत्र का कुछ तत्व सबसे अच्छे संतुलित संविधान के लिए आवश्यक है, जिसे वह एक 'राज्यतंत्र' कहते हैं। उन्होंने कई संविधानों का अध्ययन किया और वह विशेष रूप से राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया में रुचि रखते थे। उन्होंने सोचा कि समानता की मांग के लिए क्रांतियां हमेशा उठती हैं। प्राचीन रोम राजनीति के सर्वोच्च उदाहरण के रूप में मानव द्वारा संचालित कार्यालयों द्वारा संचालित एक गतिविधि है जो स्पष्ट रूप से शक्ति के व्यवहार को सीमित करता है।

2.2 राजनीति एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में

एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति शोध चर्चा और मानवीय संभावनाओं के व्यवस्थापन पर जूझ रही है। जैसे, यह शक्ति के बारे में है; यह कहना है, यह सामाजिक एजेंटों, एजेंसियों और संस्थानों की क्षमता के बारे में है कि वे अपने पर्यावरण, सामाजिक और भौतिक क्षमता को बनाए रखें या बदल सकें। यह उन संसाधनों के बारे में है, जो इस क्षमता को कम करते हैं, और उन बलों के बारे में जो इसके अनुशासन को आकार और प्रभावित करते हैं। तदनुसार, राजनीति एक ऐसी घटना है जो सभी समूहों, संस्थानों और समाजों में पाई जाती है, निजी और सार्वजनिक जीवन में कटौती करती है। यह उन सभी संबंधों, संस्थानों और संरचनाओं में व्यक्त किया जाता है जो समाजों के जीवन की उत्पत्ति और पुनरुत्पत्ति में निहित हैं। राजनीति हमारे जीवन के सभी पहलुओं का निर्माण करती है और ठीक करती है तथा यह सामूहिक समस्याओं, और उनके संकल्पों के विकास के मूल में है।

2.2.1 राजनीति को सटीक परिभाषित करना कठिन है

राजनीति की एक स्पष्ट परिभाषा, जो उन बातों को उपयुक्त बनाती है जिन्हें हम सहज रूप से 'राजनीतिक' कहते हैं, असंभव है। राजनीति विभिन्न उपयोगों और बारीकियों के साथ एक शब्द है। शायद, हम एक संक्षेपण बयान के लिए इस तरह से क़रीब पहुँच सकते हैं। राजनीति वह गतिविधि है जिसके द्वारा समूह अपने सदस्यों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के प्रयास के माध्यम से सामूहिक निर्णयों तक पहुँचते हैं। इस परिभाषा में कई बड़े महत्वपूर्ण बिंदु हैं।

2.2.2 राजनीति की प्रकृति

राजनीति एक सामूहिक गतिविधि है, जिसमें वे लोग शामिल होते हैं जो आम सदस्यता स्वीकार करते हैं या कम से कम साझा नियत को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार, रॉबिन्सन क्रूसो राजनीति का नित्य प्रयोग नहीं कर सकते थे। राजनीति विचारों की एक प्रारंभिक विविधता को मानती है, यदि लक्ष्यों के बारे में न सही, तो कम से कम साधनों के बारे में इसे मानती है। क्या हम सभी हर समय सहमत हो सकते हैं, इससे राजनीति बेमानी होगी। राजनीति में चर्चा और अनुनय के माध्यम से ऐसे मतभेदों को सही कर लेना शामिल है। इसलिए, संचार राजनीति का केंद्र है। राजनीतिक निर्णय एक समूह के लिए आधिकारिक नीति बन जाते हैं, सदस्यों को उन निर्णयों के लिए बाध्य करते हैं जो यदि आवश्यक हो तो बल द्वारा कार्यान्वित किए जाते हैं। यदि हिंसा से निर्णय पूरी तरह से हो जाता है, तो राजनीति बहुत कम होती है, लेकिन ज़बरदस्ती करना, या इसका खतरा, सामूहिक निर्णय तक पहुंचने की प्रक्रिया को कम करता है। राजनीति की आवश्यकता मानव जीवन के सामूहिक चरित्र से उत्पन्न होती है। हम एक ऐसे समूह में रहते हैं, जिसे सामूहिक निर्णयों तक पहुंचना चाहिएः जो संसाधनों को साझा करने के बारे में होना चाहिए, और अन्य समूहों से संबंधित और भविष्य के लिए योजना के बारे में होना चाहिए। एक परिवार चर्चा करता है कि उसे छुट्टी कहाँ मनानी है, एक देश यह फैसला लेता है कि युद्ध करना है या नहीं, दुनिया प्रदूषण से होने वाले नुकसान को सीमित करने की मांग कर रही है, ये सभी ऐसे समूह हैं जो निर्णय लेने की मांग करते हैं जो उनके सभी सदस्यों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक प्राणी के रूप में, राजनीति हमारे भाग्य का हिस्सा है, हमारे पास सतत कार्यरत रहने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है।

2.2.3 राजनीतिः मानव स्थिति की एक अपरिहार्य विशेषता

इसलिए, यद्यपि 'राजनीति' शब्द का उपयोग अक्सर निंदनीय रूप से किया जाता है, सार्वजनिक हित की आड़ में निजी लाभ की खोज की आलोचना करने के लिए, राजनीति, मानव स्थिति की एक अपरिहार्य विशेषता है। दरअसल, यूनानी दार्शनिक अरस्तू ने तर्क दिया कि 'मनुष्य स्वभाव से एक राजनीतिक पशु है'। इस से उनका तात्पर्य न केवल यह था कि राजनीति अपरिहार्य है, बल्कि यह आवश्यक मानव गतिविधि है; राजनीतिक जुड़ाव वह विशेषता है जो सबसे तेजी से हमें अन्य प्रजातियों से अलग करती है। अरस्तू के अनुसार, लोग केवल एक राजनीतिक समुदाय में भागीदारी के माध्यम से तर्क, गुणी प्राणियों के रूप में अपने वास्तविक स्वरूप को व्यक्त कर सकते हैं। एक समूह के सदस्य शायद ही कभी सहमत हों; कम से कम शुरू में, कि किस क्रियाविधि का पालन करना है। भले ही लक्ष्यों को लेकर सहमति हो, पर साधनों को लेकर अभी भी झगड़ा हो सकता है। फिर भी एक निर्णय पर पहुँचना चाहिए, एक तरह से या दूसरे, और एक बार किए जाने पर, यह समूह के सभी सदस्यों को प्रतिबद्ध करेगा। इस प्रकार, राजनीति में कई प्रकार के विचारों को व्यक्त करने और फिर एक समग्र निर्णय में संयोजित करने की प्रक्रिया शामिल है। जैसा कि शिवेली बताते हैं, ''राजनीतिक कार्रवाई की व्याख्या, एक सामान्य तरीके से तर्कसंगत रूप से, सबसे अच्छा समाधान निकालने के तरीके के रूप में की जा सकती है - या कम से कम एक उचित सामान्य समाधान निकालने का तरीका हो सकता है।'' यानी राजनीति में जनता की पसंद शामिल होती है।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) एक व्यावहारिक गतिविधि के रूप में राजनीति क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजनीति की महत्वपूर्ण प्रकृति पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 राजनीति क्या है?

राजनीति शब्द के अर्थ के बारे में हर कोई कुछ न कुछ जानता है; कुछ लोगों को यह सवाल काफी सतही भी लग सकता है। राजनीति 'वह है जो समाचार पत्रों में पढ़ता है या टेलीविजन पर देखता है। यह राजनेताओं की गतिविधियों से संबंधित है, विशेष रूप से राजनीतिक दलों के नेताओं से। राजनीति क्या है? क्यों, शुद्ध रूप से, क्या ये गतिविधियाँ 'राजनीतिक' हैं और क्या राजनीति की प्रकृति को परिभाषित करती हैं? यदि कोई राजनेताओं की गतिविधियों के संदर्भ में परिभाषा के साथ शुरू होता है, तो कोई कह सकता है कि राजनीति सत्ता के लिए अपने संघर्ष में नेताओं की प्रतिद्वंद्विता पर ध्यान केंद्रित करती है। यह निश्चित रूप से उस तरह की परिभाषा होगी जिसके साथ अधिकांश लोग सहमत होंगे। वहाँ भी, शायद इस बात पर सहमति होगी कि राजनीति अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राज्यों के बीच संबंध को संदर्भित करती है। राजनीति शक्ति के बारे में और उसे कैसे वितरित किया जाता है उस बारे में है। हालाँकि, शक्ति शून्य में तैरने वाली एक अमूर्त इकाई नहीं है। यह मानव में सन्निहित है। शक्ति एक ऐसा सम्बन्ध है, जहां कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा को दूसरे व्यक्तियों पर थोप सकता है, जिससे बाद दुसरे के ऊपर है कि वह उसका पालन करता है या नहीं। इसलिए, नेतृत्व की विशेषता वाली स्थिति पैदा होती है, वर्चस्व और अधीनता का संबंध। मैक्स वेबरने, 1918 के अपने प्रसिद्ध व्याख्यान, 'राजनीति एक व्यवसाय के रूप में', को इस प्रस्ताव के साथ शुरू किया कि राजनीति की अवधारणा अत्यंत व्यापकता पर आधारित थी और इसमें हर प्रकार का स्वतंत्र नेतृत्व शामिल था। किसी भी संदर्भ में, इस तरह के काम में ऐसा नेतृत्व मौजूद हो, तो समझना चाहिए कि राजनीति मौजूद है। हमारी शर्तों में, राजनीति में ऐसी कोई भी स्थिति शामिल होगी जहां शक्ति संबंध विद्यमान थे, अर्थात् जहां लोग विवश थे या हावी थे या एक तरह के या किसी अन्य के अधिकार के अधीन थे। इसमें उन स्थितियों को भी शामिल किया जाएगा, जहां व्यक्तियों की

व्यक्तिपरक इच्छा के बजाय संरचनाओं या संस्थानों के एक समूह द्वारा लोगों को विवश किया गया था। इस तरह की व्यापक परिभाषा दिखाने का यह लाभ है कि राजनीति जरूरी नहीं कि सरकार का विषय हो, और न ही केवल नेताओं की गतिविधियों से संबंधित हो। राजनीति हर उस स्थिति के संदर्भ में मौजूद है जहां नेतृत्व की स्थिति हासिल करने या बनाए रखने के प्रयास में सत्ता की संरचना और संघर्ष है। इस अर्थ में, कोई भी कारोबारी यूनियनों की राजनीति के बारे में या 'विश्वविद्यालय की राजनीति' के बारे में बोल सकता है। कोई 'यौन राजनीति' पर चर्चा कर सकता है, जिसका अर्थ है महिलाओं पर पुरुषों का वर्चस्व या इस संबंध को बदलने की कोशिश। वर्तमान में, विभिन्न देशों में विभिन्न रंग या नस्ल के लोगों की, शक्ति या इसके अभाव के संदर्भ में, नस्लभेद की राजनीति के बारे में बहुत विवाद है। एक संकीर्ण अर्थ में, हालांकि सब कुछ राजनीति है, जो हमारे जीवन को प्रभावित करती है, जो कि उन लोगों को एजेंसी के माध्यम से प्रभावित करती है जो राज्य की शक्ति और उसका इस्तेमाल करते हैं और जिन उद्देश्यों के लिए वे उस नियंत्रण का उपयोग करते हैं। ऊपर दिए गए व्याख्यान में, वेबर ने शुरुआत में सामान्य नेतृत्व के संदर्भ में राजनीति की एक बहुत व्यापक परिभाषा देने के बाद, एक और अधिक सीमित परिभाषा का निर्माण कियाः 'हम राजनीति द्वारा समझना चाहते हैं', उन्होंने लिखा, "आज के समय में, राज्य पर एक राजनीतिक संघ का केवल नेतृत्व, या नेतृत्व का प्रभाव है, इस परिप्रेक्ष्य में राज्य केंद्रीय राजनीतिक संघ है।"एक राजनीतिक प्रश्न वह होता है जो राज्य से सम्बंधित होता है, इस विषय से सम्बंधित होता है कि राज्य का नियंत्रण किसके हाथ में है, किन उद्देश्यों के लिए उस शक्ति का उपयोग किया जाता है और किन परिणामों के साथ आदि।

2.4 राज्य क्या है?

एक नया मुद्दा यहां आता हैः राज्य क्या है? सवाल यह है कि उत्तर देने के लिए कोई आसान तरीका नहीं है, न ही कोई एक सामान्य समझौता है कि इसका उत्तर क्या होना चाहिए। पहले यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि राज्य के विभिन्न रूप हैं, जो महत्वपूर्ण तरीकों से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। ग्रीक नगर-राज्य आधुनिक राष्ट्रवाद से स्पष्ट रूप से अलग है, जो फ्रांसीसी क्रांति के बाद से विश्व राजनीति पर हावी है। समकालीन उदारवादी-लोकतांत्रिक राज्य, जो ब्रिटेन और पश्चिमी यूरोप में मौजूद है, हिटलर या मुसोलिनी के फासीवादी प्रकार से अलग है। यह उन राज्यों से भी अलग है, जो पूर्व यूएसएसआर और पूर्वी यूरोप में मौजूद थे। राजनीति के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा यह है कि, और निश्चित रूप से इस पुस्तक का एक अभिन्न तत्व है, उन संबंधों का जिससे उसका तात्पर्य जुड़ा है उसकी व्याख्या करना। इसका उद्देश्य यह दिखाना है कि प्रत्येक विचार दूसरे से कैसे अलग है और इस तरह के भेद का क्या महत्व है।

2.4.1 राज्यः राजनीतिक संस्थानों/सामाजिक सन्दर्भ की व्याख्या पर अंतर

राज्य अपने राजनीतिक संस्थानों के संदर्भ में भिन्न हैं, साथ ही सामाजिक परिस्थिति के संदर्भ में, जिसके भीतर वे स्थित हैं और जिसे वे बनाए रखने की कोशिश करते हैं। इसलिए, एक संसद और एक स्वतंत्र न्यायपालिका के रूप में जब प्रतिनिधि संस्थाएं उदारवादी लोकतांत्रिक राज्य का समर्थन करती हैं, तो नेता फासीवादी राज्य को नियंत्रित करता है। सामाजिक संदर्भ के संबंध में, महत्वपूर्ण अंतर पश्चिमी और सोवियत प्रकार की प्रणालियों के बीच है, अब तक, पूर्व को एक समाज में अंतर्निहित किया गया है जो कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अनुसार आयोजित किया जाता है, जबकि बाद के मामले में,

उत्पादक समाज के संसाधनों का स्वामित्व और नियंत्रण राज्य द्वारा किया जाता है। इसलिए प्रत्येक मामले में, राज्य की संरचना अलग ढंग से की गई है, यह एक बहुत ही अलग तरह के सामाजिक ढांचे में काम करता है, और यह राज्य की प्रकृति और उद्देश्यों को बड़े पैमाने पर प्रभावित और प्रेरित करता है, जो कि यह सेवा करना है। राज्य के विभिन्न रूप हैं, लेकिन जो भी रूप किसी के भी दिमाग में है, राज्य उस तरह से एक विशालकाय ढांचा नहीं है। इससे शुरुआत करेंगे कि राज्य सरकार के समान नहीं है, बल्कि यह विभिन्न तत्वों की एक जटिलता है, जिनमें से सरकार केवल एक है। पश्चिमी प्रकार के उदारवादी-लोकतांत्रिक राज्य में, सरकार बनाने वाले लोग वास्तव में राज्य सत्ता के साथ हैं। वे राज्य के नाम से आवाज़ उठाते हैं और राज्य की शक्ति की परतों को नियंत्रित करने के लिए उस अनुसार कार्यालय ले लेते हैं। फिर भी, प्रतीक को बदलने के लिए, राज्य के सदन में कई भवन होते हैं और उनमें से एक पर सरकार का कब्जा रहता है।

2.4.2 राज्य पर राल्फ मिलिबैंड के विचार

राज्य पर राल्फ मिलिबैंड के विचार उनकी पुस्तक "द स्टेट इन कैपिटलिस्ट सोसाइटी" में दिये गये हैं। राल्फ मिलिबैंड उन विभिन्न तत्वों को दर्ज करते हैं, जो राज्य के गठन में एक साथ काम करते हैं। पहला, लेकिन किसी भी तरह से राज्य तंत्र का एकमात्र तत्व, सरकार नहीं है। पहला, सरकार किसी भी तरह से राज्य तंत्र का एकमात्र तत्त्व नहीं हो सकता है। दूसरा, प्रशासनिक तत्व, सिविल सेवा या नौकरशाही है। यह प्रशासनिक कार्यपालिका, उदारवादी-लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में, तटस्थ रहने वाली, राजनेताओं के आदेशों को पूरा करने वाली है, जो सत्ता में हैं। वास्तव में, हालांकि, नौकरशाही का अपना अधिकार हो सकता है और अपनी शक्ति का निपटान कर सकता है। तीसरा, मिलिबैंड की सूची में सैन्य और पुलिस, राज्य का आदेश-अनुरक्षण या दमनकारी शस्त्र आते हैं। चौथा, न्यायपालिका, किसी भी संवैधानिक प्रणाली में, न्यायपालिका को सरकारी शक्ति के धारकों से स्वतंत्र माना जाता है; यह उन पर जाँच के रूप में कार्य कर सकता है। पांचवां, उप-केंद्र या स्थानीय सरकार की इकाइयाँ हैं। कुछ संघीय प्रणालियों में, इन इकाइयों को केंद्र सरकार से काफी स्वतंत्रता प्राप्त होती है, जो शक्ति के अपने क्षेत्र को नियंत्रित करती है, जहां सरकार संवैधानिक रूप से हस्तक्षेप करने से वंचित है। केंद्र और स्थानीय सरकार के बीच संबंध एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मुद्दा बन सकता है, जैसा कि ग्रेटर लंदन काउंसिल और महानगरीय काउंटियों के उन्मूलन, स्थानीय सरकार के वित्तपोषण के बारे में तर्क, 'दर कैपिंग' आदि पर हाल की ब्रिटिश राजनीति के विवाद में देखा जा सकता है। छठी और अंत में, कोई भी प्रतिनिधि विधानसभाओं और ब्रिटिश प्रणाली में संसद को एक सूची में जोड़ सकता है। राजनीतिक दलों का भी उल्लेख किया जा सकता है, हालांकि वे सामान्य रूप से राज्य तंत्र का हिस्सा नहीं हैं, कम से कम उदार लोकतंत्र में नहीं। वे प्रतिनिधि सभा में अपनी स्पष्ट भूमिका निभाते हैं और यह वहाँ है कि, कम से कम आंशिक रूप से, सरकार और विपक्ष के बीच प्रतिस्पर्धी लड़ाई को बढ़ाया जाता है।

2.4.3 राज्य के विभिन्न रूप

आधुनिक राज्य की पहचान राष्ट्र-राज्य के रूप में की जाती है। राज्य का अस्तित्व एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के माध्यम से अपने वर्तमान स्वरूप में आया है, जो हजारों वर्षों से फैला हुआ है। यह धर्म, राजसत्ता, युद्ध, संपत्ति, राजनीतिक चेतना और तकनीकी विकास जैसे विभिन्न कारकों का परस्पर संबंध है। राज्य के ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया में, निम्नलिखित रूप हैं- आदिवासी राज्य, प्राच्य साम्राज्य, ग्रीक शहर राज्य, रोमन विश्व साम्राज्य, सामंती राज्य और आधुनिक राष्ट्र राज्य। पश्चिमी राष्ट्र की संधि के बाद 1648 में

हस्ताक्षर किए जाने के बाद आधुनिक राष्ट्र राज्य का उदय हुआ। इसने एक क्षेत्रीय राज्य को उभरने के लिए प्रेरित किया, जो बाहरी क्षेत्र से घरेलू को छोड़कर किसी विशेष क्षेत्र में राजनीतिक अधिकार को मजबूत करता है। अपनी-अपनी राष्ट्रीय भावना के साथ अलग-अलग राज्यों में क्षेत्र के अलग होने से संप्रभुता के आधुनिक सिद्धांत की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। अमेरिकी राज्यों में उभरने के लिए अमेरिकी और फ्रेंच क्रांतियों ने बढ़कर योगदान दिया।

राज्य की आधुनिक अवधारणा उदार और मार्क्सवादी दृष्टिकोण से हावी है। उदारवादी दृष्टिकोण गतिशील है क्योंकि यह समय के साथ बदल गया है जो हितों और व्यक्तियों और समाज की आवश्यकता पर निर्भर करता है। राज्य का प्रारंभिक उदारवादी दृष्टिकोण नकारात्मक था, क्योंकि यह व्यक्तिगत मामलों में गैर-बराबरी का पक्षधर था। 20 वीं सदी का उदारवाद, कल्याणकारी राज्य से जुड़ा हुआ है, जो सामाजिक स्वतंत्रता के साथ व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समेटने की कोशिश करता है। मार्क्सवादी धारणा राज्य के उदारवादी विचार को खारिज करती है, राज्य को वर्ग के एक साधन के रूप में बुलाती है और सर्वहारा क्रांति के माध्यम से एक वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज की स्थापना करना चाहती है। हालाँकि, रूस में रूसी क्रांति के बाद ऐसा नहीं हुआ और एक वर्गविहीन और राज्यविहीन समाज के बजाय, हमने सत्ता को सोवियत समय के दौरान कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित होते देखा। राज्य पर नारीवादी दृष्टिकोण मुख्य रूप से दो कोणों से देखा जा सकता है- उदार और कट्टरपंथी। उदारवादी नारीवादियों का कहना है कि राज्य संसद में महिलाओं के लिए सीटें बढ़ाने, महिलाओं के लिए कल्याणकारी योजनाओं का विस्तार करने आदि जैसे कदम उठाकर पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता लाने में भूमिका निभा सकते हैं। हालाँकि, कट्टरपंथी राज्य को शक्ति के एक साधन के रूप में देखते हैं, और समाज में महिलाओं की असमान स्थिति के लिए एक परिवार में श्रम के असमान वितरण को दोष देते हैं। इसलिए, वे उदारवादी दृष्टिकोण को निष्पक्ष और तटस्थ मानते हैं।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीति शब्द से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) राज्य पर राल्फ मिलिबैंड के विचारों का वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) राज्य के विभिन्न रूपों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 राजनीति एक व्यवसाय के रूप में

यह बिंदु हमें वेबर और उनके पहले से उद्धृत व्याख्यान, 'राजनीति एक वोकेशन के रूप' में वापस लाता है। यह तर्क देने के बाद कि राजनीति केंद्रीय राजनीतिक संघ, राज्य के साथ सभी से ऊपर है, वेबर ने यह कहते हुए जारी रखा कि राज्य की परिभाषा कार्यों के संदर्भ में नहीं दी जा सकती है, जो इसे पूरा करती है या समाप्त होती है। कोई नियत कार्य नहीं था जिसने विशेष रूप से राज्य का निर्धारण किया। इसलिए, एक को विशिष्ट साधनों के संदर्भ में राज्य को परिभाषित करना था, जो इसे नियोजित करता था, और ये साधन, अंततः, शारीरिक बल थे। राज्य, वेबर ने लिखा, 'एक मानव समुदाय है जो किसी दिए गए क्षेत्र के भीतर भौतिक बल के वैध उपयोग के एकाधिकार का सफलतापूर्वक दावा करता है', या भौगोलिक क्षेत्र, जिसे राज्य नियंत्रित करता है; अपने नियंत्रण को बनाए रखने के लिए भौतिक बल का उपयोग और तीसरा, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण, इस तरह के बल या छद्म के वैध उपयोग का एकाधिकार। इस वैधता को सबसे अधिक स्वीकार किया जाना चाहिए, यदि सभी नहीं, जो राज्य की सत्ता के अधीन हैं। वेबर ने निष्कर्ष निकाला कि उनके लिए राजनीति का मतलब था 'सत्ता साझा करने का प्रयास या राज्य के भीतर या समूहों के बीच सत्ता के वितरण को प्रभावित करने का प्रयास।' यह भी उल्लेख किया गया था कि प्रत्येक राज्य एक विशेष सामाजिक संदर्भ में मौजूद है। राजनीति का अध्ययन राज्य और समाज के संबंधों से जुड़ा है। राजनीति पर केंद्रित राज्य का अर्थ यह नहीं है कि इसके अध्ययन में यह उपेक्षा होनी चाहिए कि समाज के व्यापक क्षेत्र में क्या होता है और यह कैसे हो सकता है, जैसा कि वेबर कहते हैं, 'शक्ति के वितरण को प्रभावित करना'।

2.6 शक्ति का वैध उपयोग

मुद्दा यह है कि, हालांकि राज्य बल पर निर्भर करता है, यह अकेले बल पर निर्भर नहीं करता है। यहाँ, शक्ति के वैध उपयोग की धारणा आती है। यहां, शक्ति के वैध उपयोग का विचार आता है। शक्ति, सामान्य रूप से, और इसलिए राज्य की शक्ति को विभिन्न तरीकों से प्रयोग किया जा सकता है। दबाव शक्ति का एक रूप है और शायद समझने में सबसे आसान है, लेकिन यह केवल एक ही प्रकार का नहीं है। सभी शक्ति संबंधों को एक ही मूल प्रारूपों के आधार पर नहीं समझा जा सकता है। यदि तर्क और ज्ञान की ताकत के माध्यम से एक व्याख्याता छात्रों को अपने विचारों को बनाने में मदद करता है, तो ऐसा व्यक्ति एक प्रकार की शक्ति का प्रयोग करता है, हालांकि छात्रों की इच्छा के विरुद्ध नहीं। इस बिंदु से अधिक, सत्ता के सभी धारक उन लोगों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं जो अपने शासन के अधीन होते हैं और जिस शक्ति को वे मिटा देते हैं, उसकी सत्यता और न्याय में विश्वास करते हैं। लोगों की सहमति बनाने के लिए औचित्य का यह प्रयास वैधता की प्रक्रिया का गठन करता है। इसे सत्ता से अलग करने के लिए उचित या स्वीकृत शक्ति को सत्ता के रूप में संदर्भित किया जा सकता है, क्योंकि यह केवल प्रतिबंधों के डर के कारण था। वैध

शक्ति, या अधिकार की ऐसी स्थिति में, लोग पालन करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि ऐसा करना सही है। वे मानते हैं, जो भी कारण हो, कि शक्ति-धारकों को उनकी अग्रणी भूमिका की अनुमति है। उनके पास वैध अधिकार है, आदेश देने का अधिकार है। सत्ता के हाल के एक विश्लेषक के शब्दों में, वैध प्राधिकरण एक ऐसा शक्ति संबंध है जिसमें सत्ता धारक के पास आज्ञा का अधिकार होता है, और शक्ति का विषय, एक आज्ञाकारिता का पालन करना है।'

2.6.1 वैधीकरण पर मैक्स वेबर के विचार

वेबर के अनुसार, तीन प्रकार के वैधीकरण हैं, अर्थात् तीन विधियाँ, जिनके द्वारा, शक्ति के क्षेत्रीकरण को उचित ठहराया जा सकता है। पहला प्रकार पारंपरिक वर्चस्व से संबंधित है। फलस्वरूप, शक्ति उचित है क्योंकि सत्ता के धारक परंपरा और आदत के लिए अपील कर सकते हैं; अधिकार हमेशा व्यक्तिगत रूप से या उनके परिवारों में निहित होते है। दूसरा प्रकार करिश्माई वैधता है। नेता द्वारा प्रदर्शित असाधारण व्यक्तिगत गुणों के कारण लोग शक्ति-धारक की आज्ञा का पालन करते हैं। अंत में, तीसरा प्रकार कानूनी-तर्कसंगत प्रकार का है। लोग कतिपय व्यक्तियों की आज्ञाओं का पालन करते हैं, जो कि विशिष्ट नियमों द्वारा, कड़ाई से परिभाषित सामाजिक वर्गों में कार्य करने के लिए अधिकृत हैं। कोई यह भी कह सकता है कि पहले दो प्रकार एक व्यक्तिगत प्रकृति के हैं, जबकि कानूनी-तर्कसंगत प्रकार एक प्रक्रियात्मक चरित्र को दर्शाता है। जैसे, यह राजनीतिक प्राधिकरण की आधुनिक अवधारणा से मेल खाती है। जैसा कि वेबर कहते हैं, ''राज्य के सेवक'' द्वारा और सत्ता के उन सभी पदाधिकारियों द्वारा प्रयोग किया जाता है, जो इस संबंध में उनके सदृश हैं।'' यह स्पष्ट है कि किसी भी प्रणाली में शक्ति-धारक अपनी शक्ति को वैध के रूप में स्वीकार करना चाहते हैं। उनके दृष्टिकोण से देखा जाए तो, शक्ति के इस्तेमाल में इस तरह की स्वीकृति काफी सारा खर्चा करवा देती है। लोग स्वतंत्र और स्वेच्छा से पालन करेंगे। जबरदस्ती के साधन, फिर, लगातार प्रदर्शित करने की आवश्यकता नहीं होगी; वे इसके बजाय उन लोगों पर केंद्रित हो सकते हैं जो शक्ति संरचना की वैधता को स्वीकार नहीं करते हैं। किसी भी राजनीतिक प्रणाली में, नियमों का अनुपालन करने वाले केवल इसलिए होंगे क्योंकि गैर-अनुपालन को दंडित किया जाएगा। स्पष्ट रूप से, हालांकि, किसी भी राजनीतिक प्रणाली की स्थिरता उस हद तक बढ़ जाती है कि लोग स्वेच्छा से नियमों या कानूनों का पालन करते हैं क्योंकि वे स्थापित आदेश की वैधता को स्वीकार करते हैं। इसलिए, वे आदेश जारी करने के लिए नियमों द्वारा सशक्त लोगों के अधिकार को पहचानते हैं। वास्तव में, सभी राजनीतिक प्रणालियों को सहमति और जबरदस्ती के संयोजन के माध्यम से बनाए रखा जाता है।

2.6.2 वैधताः राजनीति विज्ञान का केंद्रीय सरोकार

ये वे कारण हैं जिनकी वजह से, सी राइट मिल्स कहते हैं, 'वैधता का विचार राजनीति विज्ञान की केंद्रीय अवधारणाओं में से एक है।' राजनीति का अध्ययन उन तरीकों से केन्द्रित होता है, जिनके द्वारा सत्ता के धारक अपनी शक्ति को उचित ठहराने की कोशिश करते हैं और जिस सीमा तक वे सफल होते हैं। शक्ति न्यायसंगत है, और वे किस हद तक सफल होते हैं। किसी भी राजनीतिक प्रणाली का अध्ययन करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि लोग मौजूदा शक्ति संरचना को उस कोटि के रूप में स्वीकार करने के लिए जाँच करें, और इस प्रकार, दबाव से अलग समझौते पर संरचना बाधित होती है। शक्ति के वास्तविक औचित्य का पता लगाना भी महत्वपूर्ण है, जो पेश किए जाते हैं; कहने का तात्पर्य यह है, कि वे विधियाँ जिनके द्वारा एक प्रणाली की शक्ति को वैध बनाया जाता है। यह, जैसा कि

अभिजात्य सिद्धांतकार मोस्का बताते हैं, किसी भी राजनीतिक प्रणाली का 'राजनीतिक सूत्र' है। वैधता का प्रश्न, इसके अलावा, स्थिरता और राजनीतिक प्रणालियों के परिवर्तन के विषयों से निपटने में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सहमति दी जा सकती है या वापस ली जा सकती है। हाल के दिनों में दक्षिण अफ्रीका के मामले को उदाहरण के रूप में उद्धृत किया जा सकता है; इसी तरह, पोलैंड की, जहाँ ऐसा लगता था कि जारज़ेल्स्की शासन की पर्याप्त लोकप्रिय तत्वों की नज़र में बहुत कम वैधता थी। मुद्दा यह है कि ऐसी स्थिति में, एक शासन को मुख्य रूप से बल पर निर्भर रहना पड़ता है। यह तब खुद को अधिक अनिश्चित स्थिति में पाता है, कमजोर और भाग्यवर्धक घटनाओं के प्रभाव के लिए खुला होता है। प्रणाली काफी समय तक जीवित रह सकती है। हालाँकि, एक बार जब यह सहमति से कहीं अधिक बल पर हो जाता है, तो क्रांतिकारी परिवर्तन के लिए कोई शर्त स्वयं प्रस्तुत नहीं होती है।

2.6.3 अवैधीकरण की प्रक्रिया

यह बताता है कि क्यों एक क्रांति अक्सर एक ऐसी अवधि से पहले होती है जब संगठन के नियंत्रित विचार निरंतर आलोचना के विषय होते हैं। इसे 'अवैधीकरण' की प्रक्रिया भी कहा जा सकता है, जिसके तहत विचार, जो कि शक्ति की मौजूदा संरचना को सही ठहराते हैं, हमले के दायरे में आते हैं। फ्रांस में प्राचीन शासन के पतन से बहुत पहले, दैवीय अधिकार और निरंकुशता के विचारों का दार्शनिकों, पूर्ण राज्य के आलोचकों ने उपहास और खंडन किया था। अवैधीकरण के इस तरह के आंदोलन ने पुरानी व्यवस्था की नींव को कमज़ोर करने में योगदान दिया। इसने अपनी क्रान्ति को उखाड़ फेंकने का रास्ता तैयार किया। एक मामला, आधुनिक समय में, वाइमर गणराज्य का हुआ है, जब जर्मन आबादी के बड़े हिस्से ने लोकतांत्रिक शासन में विश्वास खो दिया और कम्युनिस्ट विकल्प के डर से हिटलर की नेशनल-सोशलिस्ट पार्टी को अपना समर्थन दिया। नतीजा यह था कि बिना संघर्ष के गणतंत्र का पतन हो गया। इसी तरह के कारणों का पूरे यूरोपीय महाद्वीप पर समान प्रभाव था। उदार लोकतंत्र की कई पश्चिमी प्रणालियों को उखाड़ फेंका गया और फासीवादी या अर्ध-फासीवादी सत्तावादी प्रणालियों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया जैसा कि इटली, स्पेन, ऑस्ट्रिया और हंगरी में हुआ था। निष्कर्ष, एक सामान्य अर्थ में, यह होना चाहिए कि कोई भी विषय अपनी स्थिरता खो देता है, क्योंकि वह अपने विषयों की दृष्टि में वैधता का आनंद लेना बंद कर देता है। अंत में, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि सामान्य समय में भी, वैधता और अवैधता की प्रक्रियाएं किसी भी राजनीतिक प्रणाली की स्थायी विशेषताएं हैं। वैधता की प्रक्रिया, मौजूदा व्यवस्था की वैधता के लिए उपलब्ध कई मार्गों के माध्यम से कम या ज्यादा सूक्ष्म तरीकों से की जाती है। वैध विचारों को शिक्षा के शुरुआती चरणों से इसमें शामिल किया जाता है, विभिन्न प्रकार के सामाजिक संपर्क के माध्यम से फैलाया जाता है, और विशेष रूप से प्रेस, टेलीविजन और अन्य बड़े पैमाने पर मीडिया के प्रभाव से यह फैलता है। विचार, जो स्वीकार किए जाते हैं या व्यवस्था की सीमाओं के भीतर माने जाते हैं, पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों पर लगभग थोपे गए होते हैं। कार्यकलाप, जो उन सीमाओं से परे जाती है, ग़ैरक़ानूनी रूप में विद्यमान होते हैं। इसे बहुत अप्रभावित बनाने के लिए, यह राजनीतिक विकल्पों की एक श्रृंखला को बंद कर देता है।

2.6.4 जोड़तोड़ की स्वीकृति या सहमति

विध्वंसक विचारों को उत्पन्न होने से रोकने के लिए अभी भी अधिक प्रभावी तरीके उपलब्ध हैं। वे स्रोतों को बीच में भी रोक सकते हैं, वे स्रोत जो राजनीतिक सिद्धांत की धारणा और उसके प्रति सचेत होते हैं, यहां तक कि अवचेतन मन के प्रति भी। सत्ता का एक महत्वपूर्ण

आयाम लोगों की चेतना को प्रभावित करने और उन्हें ढालने की क्षमता है, ताकि वे वैकल्पिक संभावनाओं से अवगत हुए बिना मौजूदा मामलों की स्थिति को स्वीकार करेंगे। पहले सहमति है, फिर, सहमति में हेरफेर हो जाता है। एक निश्चित सीमा तक, हम सभी 'राय का वातावरण' से प्रभावित हैं। ये ऊपर की तरफ बढ़ते हुए ऊंचाई पर एक ऐसी स्थिति की ओर ले जाता है जहाँ दिमाग काम करना बंद कर देता है, छलयोजना को एक अखंड लोकप्रिय मानसिकता बनाने के लिए राज्य का जानबूझकर उद्देश्य बनाया जाता है। ऐसा नाज़ी जर्मनी में गोएबल्स के प्रचार यन्त्र का उद्देश्य था, और यह अभी भी, किसी भी सर्वाधिकारवादी शासन का उद्देश्य है। सी. राइट मिल्स इसे ऐसे परिभाषित करते हैं कि, "हेरफेर या चालाकी शक्तिहीन के लिए अज्ञात शक्ति है।" पीटर वॉर्स्ले बताते हैं कि जिन तंत्रों द्वारा चेतना में हेरफेर किया जाता है, उनका महत्व आधुनिक समाज में बढ़ता जा रहा है। मार्क्सवादी भाषा में, इस तरह की जोड़-तोड़ की सहमति अंततः एक 'झूठी चेतना' पैदा करेगी। उसके विरुद्ध, यह तर्क दिया जा सकता है कि जहाँ लोग स्वतंत्र होने के लिए और उदार-लोकतांत्रिक व्यवस्था में अपनी पसंद को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र हैं, वहाँ चेतना का हेरफेर संभव नहीं है। जोड़-तोड़ केवल वहीं हो सकता है जहां मुक्त विकल्प मौजूद नहीं है, जैसा कि एकदलीय व्यवस्था में है। यह भी तर्क दिया जाता है कि जहां भी लोग चुनने के लिए स्वतंत्र हैं, लेकिन वास्तव में मौजूदा व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं चुनते हैं। उदाहरण के लिए, कट्टरपंथी परिवर्तनों के लिए प्रतिबद्ध पार्टियों का समर्थन करके, यह मान लेना विश्वसनीय हो जाता है कि समाज की मौजूदा संरचना मोटे तौर पर 'लोग क्या चाहते हैं' पर है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि राजनीतिक पसंद का महत्व और स्वतंत्र रूप से उस विकल्प को व्यक्त करने की क्षमता को खत्म नहीं किया जा सकता है। हालाँकि, "लोग क्या चाहते हैं", कुछ हद तक विभिन्न कारकों द्वारा अनुबंधित है। विकल्प शून्य में नहीं होता है। संक्षेप में, चुनाव को ही वैधता की प्रक्रिया के प्रभाव से पूरी तरह से मुक्त नहीं माना जा सकता है।

2.6.5 राज्य के प्रशासन के कार्मिकः अभिजात वर्ग

लघु सर्वेक्षण से, हम अब तक राजनीतिक समस्याओं के हिस्सा हैं, कुछ महत्वपूर्ण बिंदु उभरते हैं, जो, निम्नलिखित चर्चा में पुनरावृत्ति करेगा। वे मुख्य रूप से इस तथ्य से उपजी हैं कि राज्य शक्ति संरचित है या टूट गई है, इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में बोलना चाहिए। यह पहले ही उल्लेख किया गया है कि विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट संबंध राजनीतिक प्रणाली द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, जिसके भीतर वे एक साम्यवादी राज्य की आंतरिक संरचना की तरह काम करते हैं। एक और प्रश्न में इन क्षेत्रों के कर्मियों को शामिल किया गया है। राज्य, आख़िरकार, एक प्रशासन नहीं है; हालांकि 'राज्य का प्रशासन' वाक्यांश का उपयोग किया जा सकता है। राज्य उन लोगों द्वारा संचालित संस्थानों का एक समूह है, जिनके विचार और बुनियादी दृष्टिकोण बड़े पैमाने पर उनके मूल और सामाजिक वातावरण से प्रभावित हैं। राज्य अभिजात वर्ग की रचना राजनीति के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण समस्या है। जे. ए. सी. ग्रिफ़िथ ने अपनी पुस्तक "द पॉलिटिक्स ऑफ़ द ज्यूडिशियरी" में, अभिजात वर्ग के अर्थ को हाल ही के अध्ययन के सन्दर्भ में उदाहरण देकर समझाया है। यह दर्शाता है कि ब्रिटेन में 'व्यापक रूप में, पांच पूर्णकालिक पेशेवर न्यायाधीशों में से चार अभिजात वर्ग के उत्पाद हैं। यह आश्चर्यजनक नहीं है कि 'राजनीतिक मामलों के बारे में न्यायिक राय' पर चर्चा करते हुए, ग्रिफिथ को 'इन मामलों में दृष्टिकोण की एक उल्लेखनीय स्थिरता मिलती है, जो कि राजनीतिक राय की सीमा के काफी संकीर्ण हिस्से में केंद्रित है।' यहाँ यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से, इस प्रश्न के अलग-अलग उत्तर दिए जाएंगे कि राज्य अभिजात वर्ग की प्रकृति और संरचना कितनी निर्णायक है। अभिजात वर्ग के सिद्धांत इस कारक को सबसे अधिक महत्व देते हैं। उनके परिप्रेक्ष्य

में, एक राजनीतिक प्रणाली की प्रकृति को उसके अभिजात वर्ग के विश्लेषण से सबसे अच्छा समझाया गया है, वह सत्तारूढ़ अल्पसंख्यक, जो राज्य तंत्र को नियंत्रित करता है। इस परिप्रेक्ष्य में, लगभग सब कुछ नेताओं की प्रतिभा और क्षमताओं पर निर्भर करता है। नेतृत्व की कम गुणवत्ता के विनाशकारी परिणाम होंगे। इस कारण से, मैक्स वेबर जर्मनी के राजनीतिक नेतृत्व की प्रकृति से बहुत चिंतित थे। वह एक मजबूत संसद के पक्ष में थे, जिसका मानना था कि वे नेताओं को तैयार करने और जिम्मेदार कार्रवाई करने में सक्षम बनाने के लिए एक पर्याप्त प्रशिक्षण का मैदान प्रदान करेंगे। वैकल्पिक रूप से, नेतृत्व नौकरशाही के हाथों में आ जाएगा, जिसके प्रशिक्षण और जीवन शैली ने उन्हें रचनात्मक नेतृत्व के लिए अनुपयुक्त सामग्री बना दिया। मार्क्सवादी सिद्धांत इस मामले को अलग तरह से देखती थी। वे राज्य अभिजात वर्ग की प्रकृति को कम महत्व देते हैं। तर्क यह होगा कि उद्देश्य और राज्य गतिविधि का संकल्प अभिजात वर्ग द्वारा कम निर्धारित किया जाता है, लेकिन सामाजिक संदर्भ और आर्थिक ढांचे से कहीं अधिक जिसके भीतर राज्य व्यवस्था स्थित है। इस दृष्टिकोण में, राज्य प्रशासन को चलाने वाले कर्मियों की भूमिका की तुलना में इस संरचना का अधिक महत्व है।

आम तौर पर, संरचनात्मक सिद्धांत सरकार के सामाजिक ढांचे से उपजी बाधाओं पर ज़ोर देते हैं, जिसके भीतर सरकार को काम करना होता है। फिर भी, दो प्रकार की व्याख्या की ज़रूरत परस्पर अनन्य नहीं है। यह हमें एक अंतिम प्रश्न पर लाता है, जो राज्य और समाज के संबंध से संबंधित है। वाक्यांश, जिसे मार्क्स ने बोनापार्टिस्ट राज्य के लिए लागू किया था, कि इसकी शक्ति-मध्य-निलंबित नहीं थी', को सभी प्रकार की राज्य प्रणालियों में लागू करने के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है। फिर, कई समस्याएं खुद को प्रस्तुत करती हैं। समाज की शक्ति संरचना कैसे प्रभावित करती है। समाज की शक्ति संरचना कैसे प्रभावित करती है और राजनीतिक नेताओं को विवश करती है? राज्य सामाजिक व्यवस्था की असमानताओं को कम करने या वैकल्पिक रूप से बनाए रखने और वैध बनाने के लिए किस हद तक हस्तक्षेप करता है? वास्तव में सिविल सोसायटी 'राज्य से किस हद तक स्वतंत्र है? कुछ सिद्धांतकारों के लिए, 'अधिनायकवाद' की अवधारणा का अर्थ है कि एक ऐसा स्थान जहां समाज को राज्य शक्ति द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित किया जाता है और इसलिए, उसके पास कोई स्वतंत्रता नहीं है। समाज की शक्ति संरचना कैसे प्रभावित करती है और राजनीतिक नेताओं को विवश करती है? राज्य सामाजिक व्यवस्था की असमानताओं को कम करने या वैकल्पिक रूप से बनाए रखने और वैध बनाने के लिए किस हद तक हस्तक्षेप करता है? वास्तव में सिविल सोसायटी 'राज्य से किस हद तक स्वतंत्र है? कुछ सिद्धांतकारों के लिए, अधिनायकवाद की अवधारणा का अर्थ एक ऐसी स्थिति का सुझाव देना है जहां समाज राज्य शक्ति द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित होता है और इसलिए, उसके पास कोई स्वतंत्रता नहीं है।

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का उपयोग करें।

ख) अपने उत्तर को इकाई के अंत में दिये गये उत्तर से मिलायें।

1) राजनीति को व्यवसाय के रूप में से क्या समझा जाता है?

.....

.....

.....

.....

2) वैधीकरण क्या है? इस पर मैक्स वेबर के क्या विचार हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) अवैधीकरण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) सहमति में जोड़तोड़ कैसे किया जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 सारांश

यह माना जा सकता है कि राजनीतिक समझ का मतलब मानव जीवन की ज़रूरतों, उद्देश्यों और लक्ष्यों को समझना है। यह मानव की राजनीतिक गतिविधियों से संबंधित है। राजनीति सत्ता का खेल है। विभिन्न खिलाड़ी एक ही समय में इस खेल को खेलते हैं और एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। राज्य इस पूरी गतिविधि का केंद्र बिंदु बनता है, क्योंकि राष्ट्रीय मामलों में यह राज्य के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में राज्यों के बीच होता है। राज्य सत्ता के वैध उपयोग के लिए अधिकृत है। प्राधिकरण को शासन करने का अधिकार है। प्राधिकरण सत्ता की तुलना में व्यापक धारणा है। स्थिति के निर्धारण का मतलब राजनीति की समझ है। यह एक स्थितिजन्य घटना की उपज है। आधुनिक राष्ट्र राज्य के उदय ने अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली को स्थिरता दी है, लेकिन कई चुनौतियां हैं जो आज के राष्ट्रों के सामने हैं। कुछ समुदाय कई हिस्सों में बिखरे हुए हैं, लेकिन सामान्य संस्कृति, भाषा या धर्म के आधार पर एकजुट होते हैं। उदाहरण के लिए, कुर्द इराक, सिरिया और टर्की में फैले हुए हैं, लेकिन एक अलग राज्य की मांग करते हैं। इसके विपरीत उदाहरण भी हैं, जहां विभिन्न जातीय समूहों ने एक राज्य का गठन किया, लेकिन एक राष्ट्र के रूप में आत्मसात नहीं कर पाए, उदाहरण के लिए, पूर्व सोवियत संघ। फिर ऐसे लोगों के मुद्दे हैं जो दूसरे देशों में चले गए हैं और प्राकृतिक नागरिक बन गए हैं, लेकिन उनके मूल के देशों के साथ संबंध जारी हैं। आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, नशीले पदार्थों की तस्करी, खाद्य सुरक्षा आदि जैसे गैर-पारंपरिक खतरे हैं, जो अकेले एक देश से नहीं निपट सकते हैं, लेकिन सहकारी सुरक्षा की आवश्यकता है। इसके लिए यह भी आवश्यक होगा कि राज्य अपने कुछ अधिकारों और

संप्रभुता को मानवता के बड़े हित में समझें। इसलिए, आधुनिक राष्ट्र राज्य को बदलते समय में प्रासंगिक बने रहने के लिए इन मुद्दों को हल करने की आवश्यकता है।

2.8 संदर्भ

बॉल, एलन आर. (1988), *माडर्न पाल्टिकस एंड गर्वनमेंट,* लंदनः मैकमिलन

भार्गव, आर और अशोक आचार्य (संस्करण), (2015), *पाल्टिकल थ्योरी : एन इंटरोडक्शन,* नई दिल्लीः पीयरसन

फ्रेडरिक, कार्ल जे (1967), *एन इंटरोडक्शन टू पाल्टिकल थ्योरी,* न्यूयॉर्कः हार्पर और रो

हेल्ड, डेविड (एड), (1991), *पॉलिटिकल थ्योरी टुडे,* कैम्ब्रिजः पॉलिटी प्रेस

2.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) आपके उत्तर में इस बात पर प्रकाश डाला जाना चाहिए कि राजनीति समाज के हर वर्ग के लिए एक व्यापक गतिविधि है।

2) आपके जवाब में यह उजागर होना चाहिए कि यह एक सामूहिक गतिविधि है, विचारों /लक्ष्यों की विविधता को मानती है और इसका मतलब है, चर्चा/अनुनय, सामूहिक और आधिकारिक निर्णय लेने और मानव स्थिति की एक अपरिहार्य विशेषता के माध्यम से मतभेदों का सामंजस्य।

बोध प्रश्न 2

1) आपके उत्तर में लोकप्रिय धारणा, राजनेताओं की शक्ति के संघर्ष में, एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राज्यों के बीच संबंध और विशेषकर मैक्स वेबर के विचारों के संदर्भ में शक्ति के अर्थ पर प्रकाश डाला जाना चाहिए।

3) आपके उत्तर में राज्य के विभिन्न रूपों के उद्भव, वेस्टफेलिया की संधि और राज्य के उदारवादी और मार्क्सवादी विचारधारा का उल्लेख होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) आपके उत्तर में मैक्स वेबर के विचारों पर प्रकाश डाला जाना चाहिए, जैसा कि उनके व्याख्यान "रोज़गार के तौर पर राजनीति" में दिया गया है, 'लुईस बोनापार्ट के अठारहवें ब्रूमैर' में राज्य पर मार्क्स के विचार।

2) आपके उत्तर को वैधता को परिभाषित करना चाहिए और वेबर के तीन प्रकार के वैधीकरण पर चर्चा करनी चाहिए।

3) आपके उत्तर को इसे परिभाषित करना चाहिए और इतिहास से उदाहरण देना चाहिए।

4) आपके उत्तर में सहमति के हेर फेर को उजागर किया जाना चाहिए।

अन्य अध्ययन सामग्री

बैरी, पी. नॉरमन (1995), *एन इंट्रोडक्शन टू मॉडर्न पॉलिटिक्ल थ्योरी,* दि मैकमिलन प्रेसः लंदन।

बेलीस, जौन एवंअन्य (2011), *ग्लोबलाईज़ेशन ऑफ वर्ल्ड पॉलिटिक्स,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेसः न्यूयॉर्क।

भार्गव, राजीव एवं अशोक आचार्य, (2008), *पॉलिटिक्ल थ्योरी एन इंट्रोडक्शन,* पीयरसनः नई दिल्ली।

हेवुड, एड्रंयू (2013), *पॉलिटिक्लथ्योरी एन इंट्रोडक्शन,* पालग्रेवमैकमिलनः न्यूयॉर्क।

झा, शैफाली (2010), वैस्टर्न पॉलिटिक्ल थॉट, पीयरसनः नईदिल्ली।

ऐविनेरी, लोमों, *द सोशल एण्ड पॉलिटिकल थॉट ऑफ कार्लमार्क्स,* कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971

बर्लिन, इज़ाइया, *कार्लमार्क्स : हिज़ लाईफ एण्ड ऐनवाइरमैंट,* न्यू यॉर्क, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996

फुकुयामा, फ्रांसिस, *दी एण्ड ऑफ हिस्ट्री एण्ड द लास्टमैन,* न्यू यार्क, फ्री प्रेस, 1992

टकर, रॉबर्ट, *फिलॉस्फी एण्ड मिथ ऑफ कार्लमार्क्स, कैम्ब्रिज,* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1961

मैकक्लेलैंड़, जे.एस., *ए हिस्ट्री ऑफ वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लंदन, राऊटलेज, 1996

फ्रीडन, बेदशी, *दी फेमिनिनमिस्टीक,* न्यू यॉर्क, डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एण्ड को., 1963

दबोउवार, सिमोन, *दी सेंकड सेक्स,* लंदन, विंटेजहाऊस, 1949

मिल्लेद, केट, *सेक्शुअल पॉलिटिक्स,* न्यू यॉर्क, कोलंबिया यूनिवर्सिटीप्रेस, 1969

डेली, मेरी, *गाइन/इकॉलजी,* बॉस्टन, बीकनप्रेस, (1978 (1990))

बैरी, कैथलिन, *फीमेल सेक्शुअल स्लेवरी,* एंगलवुडक्लिफ्स, प्रेंटिसहॉल, 1979

हेवुड, ऐंड्रू, *ग्लाबल पॉलिटिक्स,* हैंपशायर, पॉलग्रेवमेक्मिल्लन, 2011

एगर, बेन (1991), *क्रिटिकल थियरी, पोस्टस्ट्रक्चरलिज़्म, पोस्टमॉडर्निज़्मः देयर सोशियोलॉजिकल रेलेवेन्स,* ऐन्युअल रिव्यू ऑफ सोशियॉलजी, 17, पृष्ठ 105-131

बैर्ट, पी, डी. वाइनबर्ग एण्ड वी.मोटिए (2011), *सोशल कंस्ट्रक्शनिज़्म,*

पोस्टमॉडर्निज़्म एण्ड डीकंस्ट्रक्शनिज़्म, इन आईजार्वी एण्ड जे.बोनिल्ला (सम्पा), सेज हेंड बुक ऑफ द फिलासफी ऑफ. सोशियलसाइन्सस, लंदनः सेजपब्लिकेशन्स, पृष्ठ 475-86

बेन्जामिन, ए (2006), 'डीकंस्ट्रक्शन' इन एस. मल्पास एण्ड पी. वेक (सम्पा), दारा उतलैजकम्पैनियन टू क्रिटिकलथियोरी. लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 81-90

ब्राउन, डग (1992), इंस्टिट्यूशनलिज़्म एण्ड पोस्टमॉडर्न पोलिटिक्स ऑफ सोषियल चेन्जजर्नल ऑफइकोनॉमिक इश्यूज़, 26ः 2(जून), पृष्ठ 545-552

ब्राउन, डब्लू.(2006), पावरआफ्टरफूको, इनजे. ड्राइज़ेक,बी. होनिग एण्ड ए.फिलिप्स (सम्पा), दा ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पोलिटिकल थियोरी, लंदनः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटीप्रेस, पृष्ठ 65-84

बार्स्की, आर (2001). पोस्टमॉडर्निटी, इन वी. टेलर एण्ड सी. विनक्विस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म, लंदनः राउतलैज, पृष्ठ 304-08

कार्टर, डी. (2012), लिटेररी थियोरी. यूकेः ओल्डकासल बुक्स

देरीदा, जे. (1976), ऑफ ग्रैमेटॉलजी, अनुदित, गायत्री स्पिवाक, बॉल्टिमोरः जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी प्रेस

देरीदा, जे. (1988) लेट्टरटूए जेपेनीसफ्रेंड, इनडी. वुड एण्ड आर. बेर्नास्कोनी (सम्पा) देरीदा एण्ड डिफेरेन्स. एवैनस्टनः नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटीप्रेस, पृष्ठ 4-10

इगलटन, टी (1996) *दा इल्यूज़ंस ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म.* न्यू यॉर्कः ब्लैकवैल पब्लिशिंग.

फूको, एम. (1965), मैडनेस एण्ड सिविलाइज़ेशनः ए हिस्ट्री ऑफ इनसैनिटी इन दी एज ऑफरीज़न. लंदनः राउनलैज.

फूको, एम. (1969) *आकियॉलजी ऑफ नॉलेज एण्ड दा डिसकोर्स ऑफ लैंगवज,* न्यू यॉर्कः हार्परकोलोफोन.

फूको, एम.(1977). *डिसिप्लिन एण्ड पनिशः दा बर्थ ऑफ दा प्रिज़िन.* लंदनः विन्टेज.

फूको, एम.(1980), पावर/नॉलेजः सेलेक्टेड इंटरव्यूज़ एण्ड अदर राइटिंग्स, 1972-1977, लंदनः हार्वेस्टरव्हीटशीफ.

फूको, एम (1983), दा सब्जेक्ट एण्ड पावर, इन एच. ड्रेफ्युस एण्ड पी.रैबिनो, मिशेलफूकोः वियौंडस्ट्रकचरलिज़्म एण्ड हरमेन्यूटिक्स. शिकागोः यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस

फूको एम (1991) गवर्नमेंटैलिटी, इनजी. बर्शेल, सीगॉर्डन एण्ड पी. मिल्लर (सम्पा), दी फूकोइफैक्टः स्टडीज़ इन गवर्नमेंटलरैशनैलिटी. लंदनः हार्वेस्टरव्हीटशीफ

जे. एफ.(1984), *दी पोस्टमॉडर्नकंडिशनः ए रिपोर्ट ऑन नोलेज.* मैनचेस्टरः मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस

मार्गरोनी, एम (2001), ज़ाकदेरीदा, इन वी.टेलर एण्ड सी. विनक्वेस्ट (सम्पा), एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पोस्टमॉडर्निज़्म. लंदन. राउतलैज, पृष्ठ 92-94

मल्पास, एस.(2005), *दा पोस्टमॉडर्न.* न्यू यॉर्कः राउतलैज

रिटज़र, जी. (1997) *पोस्टमॉडर्न सोशियल थियोरीः* न्यू यॉर्कः मेक्ग्रॉहिल.

सिम.एस (2001), *दी राउतलैज कम्पैनियन टू पोस्टमॉडर्निज़्म,* लंदनः राउतलैज.

विन्सेंट, ऑक्सफोर्ड ए.(2004) *दा नेचर ऑफ पोलिटिकल थियोरी,* न्यू यार्कः

अब्बास, होयेदा और कुमार, रंजय कुमार. (2012) *पोलिटिकल थ्योरी,* नई दिल्ली : पीअरसन।

बेलामी, रिचर्ड और मासोन, एंड्रू (2003). *पोलिटिकल कॉन्सेप्ट्स,* मेनचेस्टर : मेनचेस्टर यूनिवर्सिटी प्रेस.

डह्ल, रॉबर्ट (1989). *डेमोक्रेसी एंडइट्सक्रिटिक्स,* न्यूहवेन, सीटीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस.

डायमंड, लेर्री (1997). इज द थर्ड वेव ऑफ डेमोक्रेटाइजेशन ओवर? ऐनइम्पीरिकल असेसमेंट

गॉस, जी.ऍफ, और कुकाथससी. (2004) हैंडबुक ऑफ पॉलिटिकल थ्योरी, लन्दन : सेज।

हेवुड एंड्रू (2007). *पॉलिटिक्स,* हम्पशायर : पल्ग्रेवमैकमिलन।

स्टैनफोर्ड इन साइक्लोपीडिया ऑफ फिलोसोफी।

जकारिया, फरीद (1997). *द राजज ऑफ इललिबरल डेमोक्रेसी,* फॉरेनअफेयर्स, नव./दिस. ,76:6।

अब्बास, होयेदा एवं कुमार, रंजय (2012), *पॉलिटिक्लथ्योरी,* नई दिल्लीः पीयरसन।

बेह्न, रॉबर्टडी. (2001), *रिथिंकिंगडेमोक्रेटिक एकाउंटेबिलिटी,* वाशिंगटन, डी.सी.: ब्रुकिंग इंस्टीट्यूट प्रेस।

बेल्लामी, रिचर्ड एवंमैसन, एड्रेव्यू (2003), *पॉलिटिक्ल कांसैप्ट्स,* मैनचेस्टर : यूनिवर्सिटी प्रेस।

बोवेन्स, एम. (2005), "पब्लिक एकाउंटेबिलिटी", इन *द ऑक्सफोर्ड हैंडबुक ऑफ पब्लिक मैनेजमेंट,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

ड्राहल, रॉबर्ट (1989), *डेमोक्रेसी एंडइट्जक्रिटिक्स,* न्यूहैवन, सीटीः येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

डोडल, माइकलडब्ल्यू. (2006), *पब्लिक एकाउंटेबिलिटीः डिज़ाइन्स, डीलेम्मास एंड एक्सपेरियंस्स,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

गोल्डसवर्दी, जैफ्फारीडेनिस, (2010), *पार्लियामेंटरीसवरैनटीः कंट्मपेरेरीडिबेट्स,* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

हेवुड, एन्ड्यू (2007), *पॉलिटिक्स,* हैम्पशायरः पालग्रेवमैकमिलन।

रेनोलॉडस, एन्ड्यू. (संपा.) (2001), द *आर्किटेक्चर ऑफ डेमोक्रेसी,* ऑक्सफोर्डः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डॉल, रॉबर्ट(1956) एपैफरैंस टू डैमोक्रेडिक थ्योरी, शिकागो, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

डॉल, रॉबर्ट (1989) डैमोक्रेसी एंड इट्स क्रिटिक्स, येल विश्वविद्यालय प्रेस।

हेल्ड, डेविड (1987) मॉडलज़ ऑफ डैमोक्रेसी स्टैनफोर्ड, विश्वविद्यालय प्रेस।

पटनम, रॉवर्टडी. (1993) मेकिंग डैमोक्रेसी वर्क सिविल ट्रेडिशन्स इन मार्डन इटली प्रिन्सटन विश्वविद्यालय प्रेस।

ब्रिथैम, डेविड एण्ड बॉयल, केविन (1995) डैमोक्रेसी- एट्टीक्वैश्चंस ऐंडआनसर्ज़, राष्ट्रीयबुक ट्रस्ट, इण्डियाइन ऐसोसियेशनविद् यूनेस्को पब्लिशिंग।

रश, माइकल एवंफिलिप, अल्थॉफ, 1971 - " एन इनट्रोडक्शन टु पॉलिटिकल सोशियोलोजी", लंदन : नैल्सन

शर्मा, उर्मिला एवं एस.के.शर्मा, 2007 -"प्रिंसिपलस एंडथ्योरी ऑफ पॉलिटिकल साइंस", न्यू देहली : अटलांटिकपबलिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.

वर्बा, सिडनी एवं एन.एच.नी, 1987 -"पार्टिसिपेशन इन अमेरिका : पॉलिटिकल डेमोक्रेसी एंड सोशल इक्वैलिटि", दशकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ दशकागो प्रेस

विनोद,एम.जे. एवं एम.देशपांडे, 2013 -"कन्टेम्पोरेरी पॉलिटिकल थ्योरी", न्यू देहली : पीएचआई लर्निंग प्रा. लि.

बेलामीरिचर्ड (2008) सिटीजनशिपः वेरी शार्ट इन्ट्रोडक्शन,(नागरिकताः सक्षिप्त परिचय) आक्सफोर्ड : आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

डाहल राबर्ट(1989) डेमोक्रेसी एंड इट्स क्रीटिकस,(लोकतंत्र और इसकी आलोचना) न्यूहेवऩ सीटी : येल यूनिवर्सिटी प्रेस।

डेलांटीजेराल्ड (2000), सिटीजनशिपइन ए ग्लोबल ऐज़ सोसाइटी, क्लचर, पालटिक्स, (वैश्विक युगमेंनागरिकता समाज सस्कृति राजनीति), बर्किघम्/ फिलाडेल्फिया: ओपन यूनिवर्सिटी प्रेस।

हेवुड एंड्रयू (2007) पालिटिक्स,(राजनीति), हैम्पशायर : पाल्ग्रेवमैकमिलन।

किमलिका, विल (1995) मल्टीकल्चरल सिटीजनशिप : ए लिबरल थ्योरी आाफ माइनारिटी राइटस.(बहुसांस्कृतिक नागरिकता : अल्पसंख्यक अधिकारों का उदारवादी सिद्धांत), आक्सफोर्ड ओयूपी।

किमलिका, विल एंडनार्मनवेन (1995) 'रिटर्नआफ द सिटीजन : ए सर्वेआफ द रिसेंट वर्क आन सिटीजनशिपथ्योरी',(नागरिकता की वापसी नागरिकता के सिद्धांत पर हाल में हुए कार्य का सर्वेक्षण), इनरोनाल्ड बीनर (इडिटेड), थियोरिजिंग सिटीजनशिप, अल्बानीस्टेट यूनिवर्सिटी आफ न्यू यॉर्क प्रेस।

विनोद.एम.जे एंड एम. देशपांडेय (2013) कन्टेम्प्रोरी पोलिटिकलथ्योरी, (समकालीन राजनीतिक सिद्धांत), न्यू डेल्ही: पीएचआई लरनिंग प्राइवेट लिमिटेड।